ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

माघ-फाल्गुन, संवत् नानकशाही 551
वर्ष 13 अंक 6 फरवरी 2020

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 6
पावन भक्ति के शिखर : भक्त रविदास जी 8
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
भक्ति लहर के अनमोल रत्न : भक्त रविदास जी 12
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
सिक्खी के आदर्श : ब्रह्मज्ञानी भाई घन्हईआ जी 15
-डॉ. कुलदीप सिंघ
सरदार शाम सिंघ अटारी 19
-स. जगदीप सिंघ
सिक्खी सिदक का प्रतीक : बड़ा घल्लूघारा 24
-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल
साका श्री ननकाणा साहिब 27
- सतविंदर सिंघ फूलपुर
जैतो के मोर्चे की गाथा 29
-ज्ञानी सुरिंदर सिंघ निमाणा
'सिध गोसटि' बाणी और योग मत 32
-स. बलविंदर सिंघ जौड़ा सिंघा
स्वार्थ दिमाग़ पर क्या प्रभाव डालता है? 41
-डॉ. हरशिंदर कौर एम. डी.
सिध गोसटि : विचार व्याख्या 44
-डॉ. मनजीत कौर
ख़बरनामा 49

गुरबाणी विचार

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥
हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥
फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥१३ ।। (पन्ना १३६)

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज फाल्गुन मास के उपलक्ष्य में उच्चारण की गई इस पावन पउड़ी में इस मास की ऋतु तथा वातावरण एवं लोक-सभ्याचार की पृष्ठभूमि में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम की सच्ची स्तुति गायन करके मनुष्य जीवन सफल करने का महामार्ग बख़्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि फाल्गुन मास में जब शीत ऋतु चली जाती है और लोग खुशियां मनाते नज़र आते हैं, उस समय सौभाग्यशाली जीव स्त्रियों को प्रभु-मिलाप की इच्छा तथा उम्मीद लगती है। संत अथवा गुरु उनका प्रभु के साथ मिलाप का अपनी कृपामयी अगुआई से सबब बनाते हैं। उन जीव-स्त्रियों की जीवन-रूपी रात सुखमयी हो जाती है, दुखों का ग्रास नहीं बनती। सौभाग्यशाली जीव-स्त्रियों की इच्छा पूर्ण होती है और उनको प्रभु-पति मिल जाते हैं। वे अपनी सखियों के साथ प्रभु की उपमा के ही गीत गाती हैं और उन्हें प्रभु-पति के अतिरिक्त अन्य कोई नज़र नहीं आता। वे किसी दूसरे को अर्थात् सांसारिक ख्याल आदि को अपने मन-मस्तिष्क में जगह नहीं देतीं।

ऐसे में वे जीव-स्त्रियां अपना लोक और परलोक संवार लेती हैं। उनको सदीवी सुख-शांति की मानसिक-आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है। वे संसार रूपी सागर में डूबने से बच जाती हैं और पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़तीं अथवा जीवन-मुक्त हो जाती हैं। हम मनुष्य-मात्र को चाहे एक जीभ ही मिली है परंतु प्रभु के अनेक गुण इस एक जीभ द्वारा ही गायन किए जा

सकते हैं। इसके लिए हमें सतिगुरु की शरण में जाना होता है। फाल्गुन मास में हमको सदैव प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। उसको अपनी स्तुति की जरा भी इच्छा नहीं है। यहां गहरी रमज़ है कि प्रभु की स्तुति करना हमारे अपने हित में है। यह हमारा कोई प्रभु के सिर एहसान नहीं है। प्रत्येक पल प्रभु की सच्ची स्तुति में लगाकर ही जीवन अर्थपूर्ण हो सकता है। समस्त मानव जीवन-रूपी फाल्गुन मास प्रभु-स्तुति के अनुकूल है।

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥
सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥
पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥
माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४ ॥१ ॥ (पन्ना १३६)

सतिगुरु जी बारह माहा मांझ की इस अंतिम पउड़ी में प्रभु-नाम के महातम और पावन बाणी का मूल प्रयोजन दर्शाते हुए मनुष्य-मात्र को नाम-बाणी द्वारा प्रभु-नाम के साथ जुड़कर अमूल्य मनुष्य-जन्म का मूल उद्देश्य सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि जिस-जिस मनुष्य ने प्रभु-नाम का ध्यान किया उसी के ही उद्देश्यपूर्ण कार्य पूरे हुए; जिस-जिस ने पूर्ण गुरु के माध्यम से परमात्मा को याद किया वही रूहानी दरबार में सच्चा व खरा सिद्ध हुआ। सभी सुखों अथवा रूहानी सुखों के खजाने-रूप हरि-चरणों से जुड़कर भय के कठिन सागर से पार हुआ जा सकता है। नाम से जुड़ने वाले को प्रेम-भक्ति की ऊंची वस्तु मिल जाती है। वह माया रूपी विष को सहन् नहीं करता। लालच रूपी झूठ से वह छूट जाता है। उसकी अनिश्चितता दौड़ जाती है और वह प्रभु-नाम-रूप सत्य में भरपूर हो जाता है। वह परमात्मा को सदैव मन-अंतर में टिकाकर रखता है। जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि है उसके सभी महीने, दिन, मुहूर्त अच्छे हैं अर्थात् परमात्मा की कृपा ही जीवन की सफलता का आधार है। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मुझ पर भी कृपा-दृष्टि करो और मुझे अपने दर्शन-दीदार बख्शिश कर दो।

संपादकीय

सरबत्त का भला

सिक्ख पंथ सरबत्त के भले का समर्थक है। सिक्ख रोज़ाना अरदास में अकाल पुरख के सम्मुख सरबत्त के भले की याचना करते हैं। यह आदर्श नारा धरती के आदर्श मानव की पहचान है। सरबत्त के भले वाली जीवन-जाच अपना कर ही आदर्श समाज की सृजना की जा सकती है। सरबत्त के भले की भावना ही धरती को धरमसाल और बेगमपुरा बना सकती है। सरबत्त के भले की ख़ातिर गरम तवी पर भी बैठना पड़ता है, शीश भी देना पड़ता है, सरवंश भी कुर्बान करना पड़ता है, दीवार (नींव) में भी खड़े होना पड़ता है, बंद-बंद भी कटवाने पड़ते हैं, चरखड़ियों पर भी चढ़ना पड़ता है, खोपड़ी भी उतरवानी पड़ती है।

श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पहले जगत में इस भावना की कमी रही थी। विशेषत: बात यदि भारत की की जाये तो यहां प्रचलित वर्ण-विभाजन प्रणाली में अपने आप को सर्वश्रेष्ठ की उपाधि देने वाला वर्ग तो अपने सिवाय बाकी 'सरबत्त का विनाश' वाली सोच का ही धारक था। यह अति निम्न दर्जे की सोच ही देश की शक्ति को कमज़ोर कर हजारों वर्ष की ग़ुलामी का संताप हंढाने के लिए ज़िम्मेदार बनी।

गुरु साहिबान द्वारा सृजित सरबत्त के भले के आधार पर मानवतावादी रूहानी मिशन के पैरोकारों (खालसा पंथ) ने अनगिनत कुर्बानियां देकर पहले ज़ुल्मी मुग़ल राज्य की जड़ें उखाड़ीं और फिर अंग्रेज़ों से देश को आज़ाद कराया। आज़ादी के सैकड़ो वर्ष पश्चात् अब तथाकथित सर्वश्रेष्ठ वर्ग के पास पूर्ण प्रभु-सत्ता आ जाने पर इस वर्ग ने 'सरबत्त के विनाश' वाली देशमारू नीति फिर अख्तियार कर ली है। यह वर्ग सरबत्त के भले की भावना से विहीन होने के कारण दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। यह दूसरे को अपने में जज़्ब करने या ख़त्म करने की भावना का धारक है। यह वर्ग दूसरे की विरासत पर अपना रंग चढ़ा कर उसे ख़त्म कर देना चाहता है। अपनी इस भावना को अंजाम देने के लिए यह वर्ग हर कोशिश करने के लिए तत्पर है।

इस वर्ग का 'एक धर्म - एक भाषा - एक राष्ट्र' का मंसूबा देश और मानवता के लिए बड़ा घातक है। इस वर्ग के १३० करोड़ भारतीयों को हिंदू कहने वाले ग़ैरज़िम्मेदाराना बयान भारत में निवास करने वाले अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों के लिए खतरे की घंटी हैं, जो सचेत कर रहे हैं कि

अब जागने का समय है। पिछले दिनों पाकिस्तान में गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में, जहां सरबत्त के भले वाले मानवतावादी रूहानी विचार के स्रोत श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश हुआ था, उस पवित्र गुरु-स्थान पर हुआ हमला अति निंदनीय है दूसरी तरफ हमारे ही देश के एक राज्य मध्य प्रदेश में चुन-चुन कर सिक्खों के घर को ढाना एवं फसलों को बर्बाद करना, विरोध करने पर पुलिस प्रशासन द्वारा मारपीट कर दहशत का माहौल बनाना इस धर्मनिरपेक्ष देश में धर्म पर आधारित भेदभाव करने वाला शर्मनाक घटनाक्रम है। देश में पंथ-विरोधी ताकतें सरबत्त का भला मांगने वाली सिक्ख कौम और सिक्ख धर्म की मातृ-भूमि पंजाब के पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई हैं। पंजाब के जल-स्रोतों पर डाका मार कर धरती के नीचे के पानी के बेतहाशा इस्तेमाल द्वारा पंजाब को बंजर बनाने, पंजाब की जवानी को नशों और किसानी को कर्ज़े में डुबो कर पंजाब को उजाड़ने की योज़नाबंदी अमल में लाई जा रही है, जिसका असर हम अपनी आँखों से देख रहे हैं। पिछले दिनों सरकार द्वारा शुरू की गई 'अटल भूमि-जल योजना' में पंजाब को शामिल न करना पंजाब के साथ हो रहे भेदभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सरबत्त के भले की याचना करने वाले परोपकारी नानक निर्मल पंथ के वारिसों का फ़र्ज़ बाकी मत वाले लोगों से बड़ा है। आज जब देश में धर्म-आधारित अल्पसंख्यक लोग बेगानापन, निराशा और भय के साये तले है, ऐसे समय में हमें गुरबाणी, गुरमति-सिद्धांतों और अपने लासानी इतिहास से दिशा लेकर पीड़ित वर्ग के साथ खड़े होना है।

आज सिक्ख कौम और मानवता को दरपेश चुनौतियों का सामना करने के लिए पंथक स्तर पर एकजुट होने की ज़रूरत है। यदि पंथ में एक-दूसरे के साथ कोई विचारक मतभेद हैं तो हमें उन मतभेदों को सोशल मीडिया सहित सभी माध्यमों से समाज में प्रकट करने से गुरेज़ करते हुए गुरबाणी की न्यारी गुरमति-युक्ति— ''होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिदा दूरि करहु लिव लाइ॥'' के द्वारा हल करने के यत्न करने चाहिए।

पंथक-एकता, इत्तफ़ाक और पंथक मज़बूती के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब एवं गुरु-पंथ जैसी गुरमति संस्थाओं का मान-सम्मान करना हरेक गुरसिक्ख का फ़र्ज़ है। अपनी अमीर संस्थाओं, विरासत एवं परंपराओं के साथ जुड़ कर ही हम गुरमति के आदर्श सूत्र-सरबत्त के भले और पंथ की चढ़दी कला के लिए प्रयत्नशील रह सकेंगे।

—सतविंदर सिंघ फूलपुर
मो : 99144-19484

पावन भक्ति के शिखर : भक्त रविदास जी

-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

धर्म के बड़े केंद्र काशी में जन्म लेकर अपनी नई राह बनाना और उस राह पर चलते हुए भक्ति के शिखर पर जा पहुंचना असंभव को संभव बना देने जैसा था जो भक्त रविदास जी ने कर दिखाया। उनकी साधना और धर्म-दृष्टि ने लोगों को बड़े स्तर पर प्रभावित किया। लाखों लोग उनके अनुयायी हो गये। भक्त रविदास जी की भक्ति और श्रेष्ठता उनकी विनम्रता व समर्पण में निहित थी। उनका पूरा जीवन अत्यंत सहज और निर्लिप्त अवस्था वाला था। भक्त रविदास जी ने परमात्मा पर अडोल भरोसे की प्रेरणा दी :

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि
अब पतीआरु किआ कीजै ॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥
(पन्ना ६९४)

स्वयं को दीन-हीन मानने के बाद ही पूर्ण समर्पण की अवस्था बनती है और परमात्मा की भक्ति का भाव उत्पन्न होता है। जीवन जब परमात्मा की आज्ञा में चलने लगता है तो परमात्मा अपनी कृपा से उसे निहाल कर देता है। भक्त रविदास जी ने भक्ति के अनूठे रंग प्रकट किये जो पहले कभी नहीं देखे गये थे। आपने कहा कि मनुष्य यह स्वीकार करे कि वह अनेक जन्मों से परमात्मा से टूटा हुआ है और आवागमन के चक्र में पड़ कर बार-बार जन्म ले रहा है। अपने इस अवगुण को धोने के लिये वह संपूर्ण जीवन पूरी तरह से परमात्मा को समर्पित कर दे— ''बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥'' परमात्मा के दर्शन की आस मन में दृढ़ करे— ''कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥'' यह भक्ति का लक्ष्य होना चाहिये। भक्त रविदास जी ने परमात्मा की कृपा और दर्शन पाने की राह भी बताई :

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो
स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ
रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥ (पन्ना ६९४)

भक्त रविदास जी ने कहा कि अंतर में परमात्मा का सिमरन सदैव चलता रहे। आँखें सर्वत्र परमात्मा का सर्वव्यापी रूप देखें। कान सदैव परमात्मा का यशगान ग्रहण करें। मन की भावनाएं सदैव भौंरे की भांति परमात्मा के चरणों के आस-पास ही बनी रहें। जिह्वा से सदैव परमात्मा का नाम, उसका यश, महिमा का ही उच्चारण होता रहे अर्थात् मनुष्य अपनी सारी इन्द्रियों, शक्ति और चेतना को परमात्मा की भक्ति में केन्द्रित कर दे। यही पूर्ण समर्पण है। इसके साथ ही मनुष्य साधसंगत करे। अवगुणों और

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३ , ८४१७८-५२८०९

अवगुणियों को त्याग कर गुणों और गुणियों का संग करे :

साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै
भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ (पन्ना ६९४)

भक्ति के लिये भावना का होना आवश्यक है। भावना के बिना भक्ति नहीं हो सकती। भक्त रविदास जी ने कहा कि भावना साधसंगत करने से ही उत्पन्न होती है। गुरु साहिबान ने साधसंगत की महानता स्थापित करते हुए इसे मन की पवित्रता प्राप्त करने का माध्यम बताया। श्री गुरु नानक साहिब जी ने वचन किया— ''सतसंगति कैसी जाणीऐ॥ जिथै एको नामु वखाणीऐ॥'' साधसंगत वो है जिसमें परमात्मा का नाम जपने की प्रेरणा मिलती है। श्री गुरु अमरदास जी ने फरमाया है कि ''सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु॥'' भक्त रविदास जी ने जिस भावना की बात की वह परमात्मा के नाम के लिये प्रेम ही था। आपने नाम-सिमरन को परमात्मा की आरती, पूजा और सच्चा तीर्थ-स्नान बताया— ''नामु तेरो आरती मजनु मुरारे॥'' परमात्मा का नाम जपना पूजा के लिए आवश्यक मानी जाने वाली समस्त सामग्री और पूजा की संपूर्ण विधि है :

नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा
नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो
घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥ १ ॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती
नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥
नाम तेरे की जोति लगाई
भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥ (पन्ना ६९४)

भक्त रविदास जी ने संसार को कर्मकांडों, पाखंडों से निकाल कर मन की साधना की राह दिखाई। उनका स्वयं का जीवन परमात्मा में रमा हुआ था। जब वे व्यस्क हुए तो उनके पिता ने उन्हें पारिवारिक व्यवसाय से जोड़ने का प्रयास किया। भक्त रविदास जी को अपने पिता से जितना भी धन व्यवसाय के लिये मिलता उसे वे साधु-संतों की सेवा और लाचार, असहाय लोगों की सहायता में खर्च कर दिया करते थे। वे यह सब परमात्मा के प्रेम-रंग में रंग कर किया करते थे। इसमें उन्हें आत्म-संतोष प्राप्त होता था। पिता उनके इस व्यवहार से संतुष्ट नहीं थे। भक्त रविदास जी के लिये परमात्मा की भक्ति ही सर्वोपरि थी। एक दुकान में बैठ कर जूते गांठने का कार्य करने लगे। वे जब भी कार्य करते तो उनका मन परमात्मा में ही रमा रहता था। भक्त रविदास जी ने अपनी भक्ति और समर्पण से परमात्मा को पा लिया था और उसमें अभेद हो गये थे :

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ (पन्ना ९३)

उनका मानना था कि परमात्मा से सम्बन्ध वैसा ही होना चाहिये जैसा सोने और सोने के कड़े में होता है; नदी के जल और उसकी लहर में होता है। सोने का कड़ा गल कर सोना ही हो जाता है। लहर भी उठ कर अंततः जल में ही समा जाती है और अपना अस्तित्व खो देती है। परमात्मा की भक्ति में भी यही भावना होनी

चाहिये। भक्त रविदास जी की भक्ति के रंग संसार में प्रकट होने लगे और उनकी आध्यात्मिकता की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी। चित्तौड़ की महारानी भक्त रविदास जी के दर्शन कर अत्यंत प्रभावित हुई और उनकी शिष्या बन गई। महारानी ने विलासिता त्याग दी और सादगी के साथ परमात्मा की भक्ति करने लगी। चित्तौड़ के महाराजा को यह स्वीकार्य नहीं था। वे भक्त रविदास जी को एक चर्मकार के रूप में ही देख रहे थे । भक्त रविदास जी ने लोगों का व्यापक आदर-सत्कार पाने के बाद भी जूते गांठने का कार्य नहीं छोड़ा था। चित्तौड़ के महाराजा ने जब भक्त रविदास जी के शबद सुने तो उन्हें मन में आत्मिक आनन्द की अनुभूति हुई और भक्त रविदास जी के प्रति श्रद्धा पैदा हो गई। उन्होंने भक्त रविदास जी को चित्तौड़ आने का आमन्त्रण दिया। आमन्त्रण स्वीकार कर भक्त रविदास जी चित्तौड़ गये और वहां काफी समय रहे। इसके बाद वे काशी वापिस लौट आये।

भक्त रविदास जी माया-मोह में फंसे हुए मनुष्य के मन की अवस्था को भली-भांति समझते थे। वे जानते थे कि माया के प्रभाव में मनुष्य को धर्म और परमात्मा का मार्ग नहीं सूझता है। उसकी चेतना लुप्त हो जाती है। परमात्मा की कृपा से ही इस अवस्था से उबरा जा सकता है :

मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥
(पन्ना ३४६)

परमात्मा कृपा करता है तभी परमात्मा के मार्ग का ज्ञान होता है और सच्ची भावना उत्पन्न होती है। भक्त रविदास जी ने कहा कि परमात्मा से मन जोड़ने के लिये आवश्यक है कि मन संसार के माया-मोह, विकारों से दूर हो जाये— ''साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी॥ तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी॥'' विकारों और माया से दूर हुए बिना परमात्मा की भक्ति करना संभव नहीं है।

एक बार भक्त रविदास जी के एक श्रद्धालु के मन में उनकी आर्थिक दशा सुधारने का विचार आया। उसने एक पारस पत्थर थैली में डाल कर भक्त रविदास जी को रखने को दिया और कहा कि वो वापिस आकर ले लेगा। वह श्रद्धालु लंबे समय बाद वापिस लौटा। उसने आशा की थी कि भक्त रविदास जी ने पारस से सोना बना लिया होगा जिससे उनके हालात सुधर गये होंगे। वह देख कर हैरान रह गया कि भक्त रविदास जी की आर्थिक दशा वैसे की वैसी ही थी। भक्त जी ने बड़े सहज भाव से कहा कि माया उनके किसी काम की नहीं है :

प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥
जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
राखहु कंध उसारहु नीवां ॥
साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥ (पन्ना ६५८)

भक्त रविदास जी ने मनुष्य के सारे भ्रम मिटाते हुए कहा कि उसका जीवन संसार में ऐसा है जैसे कोई पक्षी अपने घोंसले में विश्राम कर रहा है। पक्षी घोंसले में विश्राम करने के बाद उड़ जाता है, फिर कहीं और अपना बसेरा बना लेता है। वैसा ही मनुष्य का जीवन है। तेरा-मेरा की दौड़ व्यर्थ

है। सब यहीं छूट जाना है। वह चाहे जितनी सम्पत्ति एकत्र कर ले, उसके काम नहीं आनी है। अंत समय उसे बस, साढ़े तीन हाथ जमीन की ही आवश्यकता पड़ती है, जितने में उसे दफन किया जा सके। उन्होंने कहा कि जिस तन की शोभा के लिये वह दिन-रात यत्न करता रहता है उसे सजाता, संवारता है, वह भी अंत में राख के ढेर में बदल जाएगा— ''इहु तनु होइगो भसम की ढेरी॥'' भक्त रविदास जी ने कहा कि मनुष्य अपने सुख , विलास के लिये कितना कुछ क्यों न एकत्र कर ले यदि उसने परमात्मा का नाम नहीं जपा उसका सारा जीवन व्यर्थ चला जाता है— ''ऊचे मंदर सुंदर नारी॥ राम नाम बिनु बाजी हारी॥'' उन्होंने कहा कि जब मन परमात्मा में रम जाता है तो उसे किसी अन्य शक्ति, पदार्थ, संबंध की आवश्यकता ही नहीं रहती। परमात्मा में रम कर मनुष्य का अस्तित्व खत्म हो जाता है :

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही॥ (पन्ना ६५७)

मनुष्य अपने अस्तित्व को मिटा कर परमात्मा को समर्पित हो जाता है, तब परमात्मा और परमात्मा की कृपा ही बचती है। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक परमात्मा की शरण नहीं मिलती। परमात्मा जब शरण देता है तो अपने में एकाकार कर लेता है, जैसे समुद्र में उठने वाली लहर समुद्र में समा जाती है और समुद्र हो जाती है। यही सच्ची भक्ति है। इसीलिये भक्त रविदास जी ने नाम जपने की प्रेरणा दी। इसके बिना तन और जीवन व्यर्थ है :

मुकंद मुकंद जपहु संसार॥
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार॥
सोई मुकंदु मुकति का दाता॥
सोई मुकंदु हमरा पित माता॥१॥
जीवत मुकंदे मरत मुकंदे॥
ता के सेवक कउ सदा अनंदे॥ (पन्ना ८७५)

भक्त रविदास जी ने कहा कि परमात्मा मुक्ति देने वाला है। वही मनुष्य का सृजनहार और पालनहार है। वह मनुष्य के जीवन में भी एकमात्र सहायक है और जीवन के बाद भी त्राणदाता है। दिन-रात परमात्मा का नाम जपने वाले मनुष्य का जीवन आनन्द से भरपूर हो जाता है। भक्ति का शिखर सहजता और आनन्द ही है। भक्त रविदास जी का जीवन परमात्मा-भक्ति के आनन्द का पर्याय था। श्री गुरु अरजन साहिब ने उनकी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल कर उन्हें अद्वितीय सम्मान प्रदान किया। वे पूरी मानवता के लिये प्रेरणा का स्रोत हैं।

भक्ति लहर के अनमोल रत्न : भक्त रविदास जी

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

भक्ति लहर की निर्गुण (प्रभु का निरंकार स्वरूप) परंपरा के अनमोल रत्न, समाज-सुधारक, महान् रहबर, उच्च कोटि के संत भक्त रविदास जी का जन्म संवत् १४३३ अर्थात् सन् १३७६ ई. में बनारस के सीरगोवर्धनपुर नामक स्थान पर माघ मास की पूर्णिमा को रविवार वाले दिन हुआ माना जाता है, शायद इसीलिए इनके माता-पिता ने इनका नाम 'रविदास' रखा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समकालीन संत कर्मदास के कथनानुसार :

संवत् चौदां सै तैतीसा, माघ सुदी पंद्रास।
दुखियों के कल्याण हित, प्रगटे श्री रविदास।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त रविदास जी के ४० शबद शामिल हैं। भक्त रविदास जी ने रूढ़िवाद, पाखंडवाद, कर्म-कांड, अंधविश्वास, जातिवाद के भेदभाव से ग्रस्त भारतीय समाज को आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक पक्षों से नई एवं क्रांतिकारी दिशा प्रदान की। भक्त जी ने अत्याचार, अन्याय, अधर्म, लूट-खसोट, पराधीनता जैसी बुराइयों के विरुद्ध विद्रोह का शंखनाद किया। भक्त जी दया, प्रेम, शांति, नम्रता, सहनशीलता के सागर थे। भूले-भटके और अज्ञानी लोगों को सीधे रास्ते पर लाने तथा समझाने का भक्त रविदास जी का ढंग अद्वितीय एवं अद्भुत था।

जिस समय भक्त रविदास जी का जन्म हुआ, उस समय भारतीय समाज में छुआछूत, ऊंच-नीच का भेदभाव बहुत फैला हुआ था। ब्राह्मण (तथाकथित कुलीन) वर्ग से संबंधित अहंकारी लोग स्वयं को श्रेष्ठ, उत्तम मानते थे। तथाकथित दलित, पिछड़े, दमित वर्ग के लोगों को घटिया व नीच समझते थे। उस समय भारत में मूर्ति-पूजा और सगुण-भक्ति की बहुलता थी। भक्त रामानंद जी द्वारा निर्गुण भक्ति की लहर को भक्त रविदास जी ने और प्रचंड किया। उन्होंने मूर्ति-पूजा का खंडन किया और निराकार प्रभु के नाम को जपने तथा सच बोलने की प्रेरणा दी। पाखंडों, कर्मकांडों, आडंबरों, ढकोसलों से दूर रहने की लोगों को शिक्षा दी। सच्चे ज्ञान को अपनाने के लिए कहा। उस समय चालाक एवं ढोंगी पुजारी, साधारण एवं भोले-भाले लोगों का पूजा-पाठ के नाम पर और कर्मकांडों द्वारा आर्थिक व मानसिक शोषण किया करते थे। परमेश्वर के नाम पर लूट-खसोट तथा ठगी का धंधा चल रहा था।

पंडितों, पुजारियों ने भक्त रामानंद जी की काफी आलोचना की कि उन्होंने एक दलित (भक्त रविदास जी) को अपना शिष्य बनाना क्यों स्वीकार किया। वे डरते थे कि यदि सभी लोग

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन: ९८७२२-५४९९०

पूजा-पाठ करने का अधिकार पा लेंगे तो कल को वे हमारे बराबर गिने जायेंगे।

वास्तव में पंडितों, पुजारियों ने धर्म को धंधा बना लिया था। वे आमजनों की भलाई के लिए कोई काम नहीं करते थे। केवल अपने हित साधते थे। हमेशा धन, संपत्ति जुटाने, हथियाने में लगे रहते थे। भक्त रविदास जी ने शोषित, दलित, दमित, गरीब तथा असहाय लोगों के कल्याण एवं उत्थान के लिए अनेक कार्य किए। वास्तव में वे सच्चे संत, रहबर, कर्मशील, समाज-निर्माता और समाज-सुधारक थे। उनकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। वे एकेश्वरवाद के समर्थक थे और ईश्वर के नाम पर किसी को गुमराह नहीं करते थे, ठगते नहीं थे। उनके पास जो धन होता था, वे भूखे लोगों के लिए लंगर की व्यवस्था करते थे। यात्रियों के लिए धर्मशालाएं और भक्तों के लिए डेरे आदि बनाने का कार्य करते थे। इस कारण पुजारी श्रेणी भक्त रविदास जी को अच्छा नहीं समझती थी, उन्हें बुरा-भला कहती थी।

भक्त जी को उनकी बुद्धि पर तरस आता। भक्त जी अपनी धुन व लगन के पक्के थे, दृढ़ निश्चय वाले थे। वे उनकी धमकियों से बिलकुल नहीं डरते थे। भक्त रविदास जी जिज्ञासुओं की जिज्ञासा शांत करने हेतु उनके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देते। उन्होंने प्रभु से प्रेम करने की विधि, उसकी भक्ति में लीन रहने की विधि बताते हुए फरमान किया :

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो
स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ
रसन अंम्रित राम नाम भाखउ॥१॥
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै॥
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै॥ (पन्ना ६९४)

भक्त रविदास जी अपनी मीठी वाणी एवं मीठे वचनों द्वारा लोगों का मन मोह लेते थे। ज्ञानपूर्ण व तर्कपूर्ण ढंग से अपनी हर बात कहते थे। उनका यश चारों ओर फैल गया। चित्तौड़ की रानी मीरा ने उन्हें अपना 'गुरु' मान लिया और उन्होंने चित्तौड़ राज्य का 'राजगुरु' बनना स्वीकार कर लिया।

भक्त रविदास जी जात-पांत, ऊंच-नीच में विश्वास नहीं रखते थे। उन्होंने स्वंय श्रम कर के दुनिया के सभी श्रमिकों का सम्मान बढ़ाया और श्रम के महत्त्व को समाज में ऊंचा स्थान दिलाया। यह जगत् जो पाप तथा कुरीतियों के कारण जगह-जगह से जीर्ण-शीर्ण हो गया था, उसे जोड़ने का काम भक्त रविदास जी ने अपनी आर द्वारा किया। नवयुग की सृजना की। समाज को खुशहाल बना दिया। तेरा-मेरा का भेदभाव मिटा दिया। भक्त रविदास जी ने फरमाया कि जब हमारी आत्मा का परमात्मा से मिलन हो जाता है, तब सब तरह के अंतर, फासले समाप्त हो जाते हैं :

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा॥ (पन्ना ९३)

भक्त रविदास जी ने समाज-सुधार के अनेक काम किए। उन्होंने हक-सच का शंखनाद कर गफलत की नींद सोये हुये लोगों को जगाने का काम किया। जहां पर किसी को कोई चिंता न हो,

कोई गम न हो, कोई छोटा-बड़ा न हो, कोई गुलाम (दास) न हो, घूमने-फिरने की आज़ादी हो, किसी किस्म का कर न देना पड़े, ऐसा एक समाज 'बेगम पुरा सहर का नाउ' का स्वप्न संजोने का काम भी भक्त जी ने किया। ज्ञान के प्रकाश द्वारा अंधेरी दुनिया को रौशन किया। दीन-हीन लोगों को अपने सीने से लगाया। उन्हें अपना स्नेह व आशीर्वाद दिया। शोषितों, दलितों, पिछड़ों में जोश व हौसला भरा। उनका पावन फरमान है :

नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
(पन्ना ११०६)

उन्होंने एक ओअंकार की महिमा गाते हुए प्रेम की ऐसी गंगा बहाई कि संसार उनकी भक्ति का लोहा मानने लगा। प्रभु से ही सच्ची प्रीति करने की प्रेरणा दी। झूठी आरती की जगह प्रभु की सच्ची आरती गाई :

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१ ॥ रहाउ ॥
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा
नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो
घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१ ॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती
नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥
नाम तेरे की जोति लगाई
भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥२ ॥
नामु तेरो तागा नामु फूल माला
भार अठारह सगल जूठारे ॥ (पन्ना ६९४)

भक्त रविदास जी ने अपनी पावन बाणी में फरमान किया है कि नम्रता वाला गुण महान् गुण होता है। उन्हें गुमान और घमंड कभी छू भी न सके। उन्होंने नम्रता के शिखर को छू लिया था। वे स्वयं के बारे में फरमाते हैं :

जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनम हमारा ॥
राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥
(पन्ना ४८६)

भक्त रविदास जी अकाल पुरख से विनती इन शब्दों में करते हैं :

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥
राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥ (पन्ना ३४५)

बेहद बिगड़ चुके, खराब हो चुके समाज का सुधार, कल्याण, उत्थान और पुनर्निमाण करते हुए, भटके हुए प्राणियों को सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते हुए, ऊंच-नीच तथा जातिगत् व्यवस्था, सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करते हुए भक्ति लहर के अनमोल रत्न भक्त रविदास जी लंबी आयु व्यतीत कर परम ज्योति में समा गए।

सिक्खी के आदर्श : ब्रह्मज्ञानी भाई घन्हईआ जी

-डॉ. कुलदीप सिंघ*

पश्चिम ने पूरब को हमेशा अपनी नज़र से देखा है। एडवर्ड सईद ने पश्चिम और पूरब के बारे में विचारे संकल्प का खंडन करते हुए पश्चिमी दृष्टि के पूर्वाग्रहों के बारे में विस्तार से चर्चा की है। अपनी पुस्तक 'ओरिएंटलिज़म' में वह स्पष्ट करता है कि पश्चिम अपना और दूसरे का सरल विभाजन कर पूरब के काबिल-ए-तारीफ पक्षों को नकार देता है; नज़र-अंदाज़ कर देता है। पूरब को अपने बारे में बात खुद ही करनी पड़ेगी। अपनी गौरवमयी विरासत और विलक्षण शख़्सियतों की उपमा खुद ही दुनिया के सामने रखनी पड़ेगी।

भाई घन्हईआ जी पंजाब की ही नहीं समूचे पूरबी जगत की ऐसी शख्सियत हैं, जिनका गौरव और प्रशंसा हमने दुनिया के सामने तो क्या रखनी थी खुद भी पूरी तरह से नहीं पहचानी। भाई साहिब सही अर्थों में आधुनिक रेड क्रास के संस्थापक थे। युद्ध के समय रण-भूमि में दोस्त-दुश्मन या अपने-पराए की तामीज़ किए बिना सेवा करने के रेड क्रास के संकल्प के संस्थापक स्विटजरलैंड की परोपकारी शख्सियत हेनरी डिऊनांट को माना जाता है, जिसका जीवन-काल सन् १८२८ से १९१० ई. तक का है। उससे १८० वर्ष पहले पंजाब की धरती पर ब्रह्मज्ञानी भाई घन्हईआ जी का जन्म हुआ, जिन्होंने सिक्खों और मुगलों के बीच महीनों और वर्षों तक चलने वाले युद्धों में अपने-पराए का भेद किए बिना घायलों की सेवा की। पश्चिमी संसार ने १८६४ ई. में जेनेवा कन्वेंशन के साथ रेड क्रास को भी मान्यता प्रदान की। इससे १६० वर्ष पूर्व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १७०४ ई. में श्री अनंदपुर साहिब के महीनों तक चले युद्ध में भाई घन्हईआ जी की तरफ से बिना किसी भेदभाव के की जा रही सेवा को मान्यता देकर घायलों को पानी पिलाने के साथ-साथ जख्मों पर लगाने के लिए मरहम भी प्रदान की।

सेवा के पुंज एवं समदर्शी भाई घन्हईआ जी का जन्म पश्चिमी पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) के वज़ीराबाद के निकट सोदरा नामक कसबे में १६४८ ई. में हुआ। आपके पिता का नाम भाई नत्थू राम जी था और माता का नाम माता सुंदरी जी था। भाई नत्थू राम जी अमीर व्यापारी थे और शाही फौज को राशन सप्लाई करने का कार्य करते थे। भाई घन्हईआ जी का बचपन बड़ा खुशहाल था। भाई साहिब की रुचि वैराग्य, त्याग और समाज-सेवा में थी। बचपन में ही अपनी

*२/९, गुरु नानक नगर, पटियाला—१४७००१

जेब में रखे पैसे जरूरतमंदों में बांट दिया करते थे। संतों-साधुओं की संगत में आपकी विशेष रुचि शुरू से थी। जब भी आस-पास कहीं महापुरुषों के आने का पता चलता, आप वहां पहुंच कर उनकी सेवा करते और उनके विचारों को सुनते। माता-पिता ने आपको सांसारिक कार्यों में लगाने के काफी यत्न किए, परंतु भाई साहिब अपनी धुन में ही मस्त रहे। उनकी इस रुचि को देख कर आखिर पिता जी ने उनके लिए आए-गए की सेवा करने के लिए एक अलग कमरा घर में बनवा दिया और उनको इन कार्यों के लिए आर्थिक सहायता भी खुले दिल से देनी शुरू कर दी। जल्दी ही उनका मेल गुरु-घर के प्रेमी सिक्ख भाई ननूआ जी के साथ हुआ और १६७४ ई. में आप श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन के लिए श्री अनंदपुर साहिब पहुंच गए। गुरु साहिब के दर्शन कर वे उनके प्रति इतने समर्पित हुए कि वहां रहकर गुरु साहिब तथा संगत की दिन-रात सेवा करने लगे। लंगर और घोड़ों की सेवा भी आपने संभाल ली। आपकी सेवा-भावना से प्रसन्न होकर गुरु साहिब ने वचन किया— ''आपकी सेवा सफल हुई है। अब आप यहां से जाओ। खुद नाम जपो और दूसरों को भी जपाओ। जरूरतमंदों की सेवा करो और गुरु-घर की खुशियां प्राप्त करो।

भाई अड्डन शाह जी की पुरातन हस्तलिखित गुरु साहिब द्वारा भाई साहिब के प्रति कहे उपरोक्त वचनों की गवाही भरती है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के वचनों का पालन करते हुए भाई घन्हईआ जी श्री अनंदपुर साहिब से वापिस अपने क्षेत्र की तरफ चल पड़े। अटक के नज़दीक कवेह (कवाह) नामक स्थान पर आपको प्यास लगी तो आपने किसी से पानी मांगा। जवाब मिला कि ''यहां पर पानी की बहुत किल्लत है। हमें बहुत दूर से पानी लाना पड़ता है। हमें खुद पानी मुश्किल से नसीब होता है। हमने लोगों को क्या पिलाना है?'' जैसे-तैसे भाई साहिब ने प्यास तो बुझा ली मगर आगे न जाकर कवेह में ही रहने का निर्णय कर लिया।

उन्होंने वहां रहकर मार्ग के किनारे हर किसी की जल-सेवा करने के लिए प्रयत्न करना शुरू कर दिया। कवेह से थोड़ी दूर पर हरोह नामक नदी से वे पानी का घड़ा भरकर लाते और लोगों को पिलाते। घड़ा खाली हो जाता, तो पुनः भर ले आते। धीरे-धीरे एक से दो, तीन, चार घड़े भरकर रखते और वे भी खाली हो जाते। उनकी सेवा की कीर्ति सब तरफ फैलने लगी। उनके ठिकाने पर रौनक बढ़ने लगी और साथ ही पानी से भरे घड़ों की गिनती भी। बाद में वह स्थान धर्मशाला के रूप में बदल गया। बड़ी गिनती में आने-जाने वाले लोगों के लिए चारपाई-बिस्तर भी बन गए। सुबह-शाम संगत जुड़ने लगी और वहां जल-सेवा के लिए बहुत-से घड़े पानी के रखे जाने लगे। यही नहीं, भाई साहिब ने खुद कोशिश कर-करवा कर उस इलाके में कुएं भी खुदवा दिए। सेवा का यह प्रवाह तीन-चार साल तक चलता रहा। इस दौरान १६७५ ई. में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी शहीद हो गए और श्री गुरु

गोबिंद सिंघ जी गुरुआई पर विराजमान हो गए। भाई घन्हईआ जी १६७८ ई. में कवेह छोड़कर दसम पातशाह के दर्शन के लिए चल पड़े। नौवें पातशाह की तरह आपने दशमेश पिता जी के दरबार की सेवा आरंभ कर दी। श्री अनंदपुर साहिब को ही अपना ठिकाना बना लिया। हर पल आप गुरु साहिब की संगत में व्यतीत करने का यत्न करते। गुरु साहिब पाउंटा साहिब गए, तो आप भी उनके साथ पाउंटा साहिब चले गए। गुरु साहिब श्री अनंदपुर साहिब वापिस लौटे तो आप भी उनके साथ ही लौट आए। कंधे पर मशक डालकर या सिर पर घड़ा रखकर वे हर समय संगत की सेवा करते।

समय ने करवट ली और श्री अनंदपुर साहिब रणभूमि में बदल गया। बंदूकों की ठाएं-ठाएं। तीरों की सनसनाहट तथा तलवारों और बरछियों की झनकार। जख्मियों की चीख-पुकार। भाई घन्हईआ जी हर समय मशक भरे हुए तड़पते जख्मियों के मुंह में पानी डालते। यह उनकी रोज़ की क्रिया बन गई थी। कई बार ऐसा भी होता था कि दुश्मन पानी पीकर फिर से तरोताज़ा होकर सिक्ख सैनिकों पर टूट पड़ते थे। इस दृश्य को देखकर सिक्ख सैनिक भाई साहिब पर क्रोधित भी होते, परंतु भाई साहिब के प्रति गुरु साहिब के मन का प्रेम देखकर वे चुप रह जाते। एक दिन उनसे रहा न गया और उन्होंने गुरु साहिब के पास भाई साहिब की शिकायत कर दी। इस शिकायत से जुड़े सारे वृत्तांत के बारे में 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में भाई संतोख सिंघ ने विस्तारपूर्वक चर्चा की है। सिंघों की शिकायत है : जिम सिंघन को जाइ पिलावै। तिम तुरकन को नित त्रिपतावै।

गुरु साहिब के पूछने पर भाई घन्हईआ जी कहते हैं— ''हजूर! मुझे कोई हिंदू, सिक्ख या मुसलमान नहीं दिखाई देता, सबमें आपका रूप ही नज़र आता है। मैं तो आपको ही जल छकाने की सेवा करता हूं।'' भाई साहिब के इस जवाब से खुश होकर गुरु साहिब ने उनको अपने गले से लगा लिया और मरहम की डब्बी देकर कहा, ''आगे से आप न केवल जख्मियों को जल छकाओ बल्कि उनके जख्मों पर मरहम-पट्टी की सेवा भी बिना किसी भेदभाव के किया करो।'' सिंघों को मुखातिब होकर भाई साहिब के प्रति आपने जो आशीर्वाद भरे वचन कहे, उनका वर्णन भाई संतोख सिंघ इस प्रकार करते हैं— गुरु साहिब ने कहा कि मेरी इच्छा है : इह भी अपनो पंथ प्रकाशै। बहु लोकन की कुमति बिनाशै।

''भाई साहिब बाकायदा अपनी विलक्षण संप्रदाय शुरू करें और लोगों में से दुरमति का नाश करें।''

गुरु साहिब के वचन सुनकर सिक्खों के मन में से अपने-पराए का भेद मिट गया। उनके मन का द्वेष दूर हो गया और उनको परम आनंद की प्राप्ति हो गई :

सुनि प्रभु ते सभि सिंघ अनंदे। दवैत हती लहि ब्रहम अनंदे।

युद्ध के दौरान भाई साहिब की यह सेवा निरंतर जारी रही। जब दशमेश पिता जी ने श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा, तब भाई साहिब वापिस

कवेह अपने पुराने ठिकाने पर आ गए। यहां पर आपने फिर से सेवा-सिमरन की दिनचर्या आरंभ कर दी। आपके बताए रास्ते पर दृढ़ता के साथ चलने वाले भाई सेवा राम आप जी के साथ आ गए। बाद में उन्होंने भाई साहिब के बारे में अपनी रचनाओं में विस्तार से बात की। भाई सेवा राम के बाद भाई अड्डण शाह सेवक बन गए। उन्होंने भी भाई साहिब के बारे में कुछ मूल्यवान रचनाएं लिखीं। इस प्रकार धीरे-धीरे भाई साहिब की संप्रदाय अपने आप ही अस्तित्व में आ गई। भाई सेवा राम और भाई अड्डुन शाह के समय इस संप्रदाय का प्रचार-प्रसार बहुत ज्यादा होने के कारण लोगों ने इसे 'सेवापंथी' या 'अड्डुनशाही संप्रदाय' का नाम दे दिया। यह संप्रदाय अपने आप में सिक्खों की रेड क्रास है। इसके अनुयाई बिना किसी भेदभाव के मानवता की सेवा करते हैं। धन-दौलत इकट्ठा नहीं करते। कटोरा और झाड़ू ही इनकी दौलत है।

खैर, कवेह में ही भाई घन्हईआ जी ने अपनी आयु के अंतिम १०-१२ वर्ष गुज़ारे। आपका ठिकाना चाहे कवेह ही रहा, परंतु आप इधर-उधर जाकर गुरमति का प्रचार करते और सेवा-सिमरन का कार्य जारी रखते। आपके इस दौरान कहे वचन भाई सहिज राम ने बाद में 'परचीआं भाई घन्हईआ जी' के रूप में संभाले हैं।

सेवा-सिमरन के साथ-साथ भाई घन्हईआ जी कीर्तन सुनने में भी बहुत रुचि लेते थे। अमृत वेले उठकर सूरज निकलने तक वे कवेह में अपने ठिकाने पर रोज़ाना कीर्तन सुनने के बाद ही दिन का और कोई काम करते थे।

भाई साहिब के जीवन का अंत भी बहुत विलक्षण था। वे रोज़ की तरह अमृत वेले कवेह के ठिकाने पर स्तंभ की ओट लगाए कीर्तन सुनने के लिए बैठे। कीर्तन की समाप्ति के बाद भी भाई साहिब की समाधि नहीं खुली। संगत ने समझा कि आपका ध्यान प्रभु-चरणों में लीन है। जब काफी समय तक यही स्थिति रही तो संगत ने समाधि से उठाने के लिए हिलाया, तभी पता चला कि भाई साहिब तो हमेशा के लिए प्रभु-चरणों में विराजमान हो गए हैं। यह घटना १७१८ ई. की है। संगत ने आपका दाह संस्कार कवेह के नज़दीक कर दिया।

भाई घन्हईआ जी जल की तरह स्वच्छ, निष्कपट और प्रत्येक के लिए समान दृष्टि रखने वाले थे। जल की तरह शीतल स्वभाव वाले सब तरफ शीतलता ही बिखेरते, शांति बांटते और नम्रता के कारण झुक कर रहते। इनकी संप्रदाय आज भी इनके बताए मार्ग पर चल रही है।

सरदार शाम सिंघ अटारी

-स. जगदीप सिंघ*

''कोई दूर दी गल्ल नहीं देश अंदर,
कदे असीं वी हुंदे सां शान वाले।''

महान नीतिवान, इतिहासकार विन्स्टन चर्चिल अपनी किताब 'हिस्ट्री ऑफ दी इंग्लिश स्पीकिंग पीपल्स' में एक जगह लिखता है— ''अंग्रेज़ों ने पंजाब में रीजेंसी स्थापित कर दी। तीन साल बाद सिक्खों ने रीजेंसी को खत्म करने का यत्न किया। राज्य के काफी अंदर जाकर उनके साथ चिलिआं वाला (चेलिआं वाला) के स्थान पर घमासान लड़ाई हुई। इस लड़ाई में तीन अंग्रेज़ी पलटनें अपने झंडे तक गंवा बैठीं, परंतु बाद में अंग्रेज़ों ने लड़ाई में अपनी प्रसिद्धि पुन: स्थापित कर ली।''

सिक्ख सिपाहियों के स्वभाव के बारे में कनिंघम लिखता है— ''हर सिक्ख इस कार्य को अपना समझता था। वह श्रमिक का काम भी करता था और बंदूक भी धारण करता था। वह तोपें खींचता, बैल हांकता और खुशी-खुशी नाव पर माल लादता एवं उतारता था। इसके मुकाबले में अंग्रेज़ फौज के हिंदोस्तानी सिपाही केवल पैसे के लिए लड़ रहे थे।''

क्योंकि गद्दारों और चापलूसों का सरकार-ए-खालसा में बोलबाला हो चुका था, इसलिए सरदार शाम सिंघ जैसा जांबाज़ जरनैल न चाहते हुए भी अपने घर अटारी में बैठा था। अंग्रेज़-सिक्ख लड़ाइयां शुरू हो चुकी थीं या यूं कह लो कि गद्दारियों की ऋतु आ गई थी। जी भरकर गद्दारियां हुईं, लेकिन किसी भी लड़ाई में सिक्ख फौज घबराई नहीं, बल्कि आगे बढ़-चढ़ कर शहादत दी।

सिक्ख फौज के साथ सतलुज पार करने के बाद लाल सिंघ ने कप्तान निकल्सन को पत्र लिखा— ''मैंने सिक्ख फौज सहित दरिया पार कर लिया है। आपको मेरी अंग्रेज़-दोस्ती का पता ही है! हुक्म करो, अब मैं क्या करूं?''

निकल्सन ने जवाब दिया— ''अगर आप अंग्रेज़ों के मित्र हो तो फिरोज़पुर पर हमला मत करो। जितनी देरी हो सकती है करो और अपनी फौज को गवर्नर जनरल के सामने ले जाओ।''

लुडलो इस बारे में कहता है— ''अगर वे उस समय हमला कर देते तो फिरोज़पुर में हमारी ८००० फौज़ बिलकुल नष्ट हो जाती और विजेता ६९००० फौज सर हेनरी हार्डिंग पर टूट पड़ती, जिसके पास उस समय केवल ८००० नफरी की फौज थी। उस समय हमारी तैयारी न के बराबर थी।''

मुद्दकी की रेतीली धरती को बहादुरों के लहू से सींचने के लिए १८ दिसंबर, १८४५ ई. का दिन आ गया। एक तरफ अंग्रेज़ों का यूनियन जैक और दूसरी तरफ सिक्ख फौज का केसरी निशान साहिब मैदान में लहराया। अंग्रेज़ फौज ने उसी जोश के साथ हमला किया जिसके साथ उन्होंने हिंदोस्तान के कई रजवाड़े फतह किए थे, मगर जल्दी ही पता लग गया

*फरीदकोट, फोन : ९८१५७-६३३१३

कि इस बार बहादुरों के साथ वास्ता पड़ा है। खालसा फौज ने हमले का जवाब हमले में दिया। अंग्रेज़ फौज लोहे की दीवार के साथ टकरा कर पीछे हट रही थी। भूखे शेरों के हमले के सामने गीदड़ ठहर न सके और अंग्रेज़ फौज का एक हिस्सा भाग कर अपनी ब्रिगेड के पीछे जा छिपा। लाल सिंघ को कभी स्वीकार नहीं था कि सिक्ख जीत जाएं, इसलिए वह अपनी ४००० डोगरा फौज समेत मैदान में से भाग गया। उसके पीछे कन्हैया लाल, अयोध्या प्रसाद, अमर नाथ आदि भी भाग गए। बिना जरनैल के लड़ रही ६-७ हज़ार खालसा फौज को देख कर अंग्रेज़ अफ़सर हैरान रह गए। अंग्रेज़ फौज अपने होश भुला बैठी। कइयों ने तो यहां तक लिखा है कि अंग्रेज़ फौज के कुछ बंदों ने घबरा कर आपस में गोलियां चलानी आरंभ कर दीं। दगा, फरेब और गद्दारी वाले हालात में मुद्दकी की लड़ाई हुई, जो बहुत थोड़ा समय चली। लार्ड हयू गफ के अनुसार— ''सिक्ख अपना सब कुछ दांव पर लगा कर खूब लड़े।''

२१ दिसंबर, १८४५ ई. को शाम के समय फेरू शहर की लड़ाई शुरू हुई, जिसके बारे में कनिंघम ने लिखा है— ''वह भूलने वाली रात नहीं थी। उस समय अंग्रेज़ों के हाथ से वह धरती छिनती हुई लग रही थी। अंग्रेज़ सिक्खों के मोर्चों तक पहुंच गए। सिक्ख ज़रा न घबराए, बल्कि और ज्यादा जोश के साथ गोलीबारी करने लगे। हैरी स्मिथ की फौज बिजली की भांति गर्ज कर सिक्खों पर टूट पड़ी और छः तोपें छीन ली। साथ ही मानांवालिया चार पलटनें खड़ी थीं। उन्होंने जयकारों की गूंज के साथ तूफान की तरह बढ़ रही फौज पर हमला बोल दिया और छः तोपें वापिस ले लीं। अब अंग्रेज़ फौज के पास पीछे हटने के अलावा कोई रास्ता नहीं रह गया था। अंग्रेज़ फौज में कुर्लाहट मच रही थी। घबराहट की हालत में २१-२२ की रात को अंग्रेज़ फेरू शहर में ठहरे रहने में अपनी हार मान रहे थे, इसलिए फिरोज़पुर की तरफ पीछे हट जाने की सलाह करने लगे, बल्कि कायम-मुकाम एडजूडेंट जनरल कैप्टन लमली ने कुछ रिसाले को हुक्म भी दे दिया था कि वे सीधा फिरोज़पुर कूच कर जाएं। यही नहीं, हथियार छोड़ कर अपने आप को बिना शर्त सिक्खों के हवाले करने के उपाय भी सोचे जाने लगे और सरकारी कागज़ों को आग लगा कर फूंक देने की योजनाएं भी बन गई थीं। गवर्नर जनरल ने अपने पुत्र तथा प्राईवेट सेक्रेटरी को कुछ सरकारी कागज़, अपना स्टार ऑफ दी बाथ और अपनी नेपोलियन वाली तलवार, जो डीऊक ऑफ वेलिंगटन की तरफ से तोहफा मिली हुई थी, देकर अंबाला की तरफ चले जाने का हुक्म दे दिया था और कह दिया था कि अगर हार हो जाए तो वह सरकारी कागज़ों को आग लगा कर फूंक दे तथा सीधा दिल्ली चला जाए। कर्नल जी. बी. मैलिसन लिखता है— ''उस समय ज्यादा अंग्रेज़ फौज में अफरातफरी मच गई थी। एक कमांड अफसर, जिसने अपने साथियों को इकट्ठा करने का निष्फल यत्न किया था, के मुंह से 'भारत गया' की आवाज़ सुनी गई। सिक्ख फौज़ ने अंग्रेज़ों का मुंह मोड़ दिया। स्मिथ को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। गिलबर्ट को भी उसकी प्राप्त की स्थिति को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। यदि उस समय कोई बुद्धिमान नेता सिक्ख फौज को योग्य हिदायत दे सकता तो थकी-हारी अंग्रेज़ फौज को कोई शक्ति न बचा सकती और उसे सिर छिपाने के लिए भी जगह न मिलती।''

चार्ल्स गफ और आर्थर डी. इन्स लिखते हैं—

''कभी किसी फौज ने, जिसकी संख्या इतनी कम हो, अंग्रेज़ फौज का इस बहादुरी के साथ मुकाबला नहीं किया था, जिस तरह सिक्खों ने फेरू शहर की जंग में किया। चाहे अंग्रेज़ों को जीत प्राप्त हुई, परंतु दलील इसके विपरीत है। अगर सिक्खों को ऐसे सेनापति मिलते, जिनके नेतृत्व में वे अपना पराक्रम दिखा सकते, तो परिणाम कुछ और होता।''

चाहे रात को हालात सिक्ख फौज के पक्ष में थे, परंतु २२ दिसंबर की सुबह को हालात बदल गए। लाल सिंघ रात को अपने घुड़सवारों और तोपखाने के ६० तोपचियों को साथ लेकर भाग गया था। (कर्नल मूतो की रिपोर्ट) तेज सिंघ को सिक्ख फौज ने अंग्रेज़ों पर हमला करने के लिए कहा, परंतु वह भी बिना कोई हुक्म दिए लड़ाई के मैदान में से अंधाधुंध भाग गया। यह वो समय था जब अंग्रेज़ों के तोपखाने का बारूद खत्म हो चुका था और उनकी फौज का एक हिस्सा पलट कर फिरोज़पुर भागा जा रहा था। इस समय अगर ज़रा-सी हिम्मत के साथ हमला किया जाता तो अंग्रेज़ों का कोई भी प्रयत्न उनकी बाकी फौज को बचा नहीं सकता था। (कनिंघम) विलियम एडवर्ड्ज़ लिखता है— ''अगर सिक्ख आगे बढ़ आते तो इसका नतीजा हमारी तबाही थी, क्योंकि यूरोपियन रेजिमेंटों की संख्या बहुत कम रह गई थी और हमारे तोपखाने तथा छोटे हथियारों का बारूद लगभग खत्म हो चुका था।''

''लालू दी लाली गई, तेजू दा गया तेज।
रण विच पिट्ठ दिखाइ के, मोढा आए फेर।''

सरदार शाम सिंघ अटारी को न्यौता : फेरू शहर की लड़ाई में लालू (लाल सिंघ) और तेजू (तेज सिंघ) के भाग जाने की खबर महारानी जिंद कौर के पास पहुंची। उस समय उसकी चेतना सीधी अटारी गई और उसने दस सवार सरदार की तरफ भेजे तथा जंग में शामिल होने का न्यौता दिया। ढाडी सोहन सिंघ सीतल ने इस दृश्य को इस प्रकार बयान किया है:

चिट्ठी लिखी महाराणी ने शाम सिंघ नूं,
बैठ रिहों की चित्त विच धार सिंघा ?
दोवें जंग मुद्दकी, फेरू शहिर वाले,
सिंघ आए अंग्रेज़ां तों हार सिंघा !
काहनूं हारदे, किउं मिहणे जग्ग दिंदा,
जिउंदी हुंदी जे अज्ज सरकार सिंघा !
तेग सिंघां दी तां खुंडी नहीं होई,
ऐपर आपणे हो गए गद्दार सिंघा !
हुण वी चमकी ना जे सिंघा तेग तेरी,
तां फिर सारे निशान मिटाए जासन।
तेरे लाडले कौर दी हिक्क उत्ते,
कल्ल नूं गैरां दे झंडे झुलाए जासन।
पुट्ठ शेरे-पंजाब दी मढ़ी ताईं,
उहदे पैरां विच फुल्ल रुलाए जासन।
बदली जिंने तकदीर पंजाब दी सी,
उहदी आतमा नूं तीर लाए जासन।
अजे समां ई वकत संभाल सिंघा,
रुढ़ी जांदी पंजाब दी शान रक्ख लै !
लहिंदी दिस्से 'रणजीत' दी पग्ग मैनूं,
मोए मित्तर दी योधिआ आन रक्ख लै !

सरदार चाहे गद्दार पूरबीए अफसर की कमान तले सिक्खों को तबाह करने की बदनीयत से लड़ी जा रही लड़ाई के विरुद्ध था, परंतु इस ख्याल के साथ कि शायद वह कमज़ोर दिल के कारण मौत के डर से पीछे हटा हुआ है, तो उसने जंग में शामिल होने का फैसला कर लिया और साथ ही कसम खा

ली कि लड़ाई हार जाने की सूरत में वह जिंदा नहीं मुड़ेगा। सीतल जी लिखते हैं :

मरदी कौम विच जिंदगी भरन खातर,
मैं हुण देश तों होण कुरबान चल्लिआं।
जिहड़े कौमी-गद्दारां ने दाग लाए,
धो के खून दे नाल मिटाण चल्लिआं।
जिहड़े देश-धरोहीआं ने लाए लांबू,
छट्टे रत्त दे मार बुझाण चल्लिआं।
पिच्छों होऊ, सो वेखेगा जग सारा,
मैं तां आपणी तोड़ निभाण चल्लिआं।
ना मैं होवांगा, ना इह पंजाब होसी,
ऐपर दिल विच दोहां दी याद रहिसी।
'सीतल' सूरज कुरबानी दा चमकदा रहू,
जदों तीक इह देश आबाद रहिसी।

९-१० फरवरी, १८४६ ई. सभरावां : ग्रिफिन लिखता है— कहा जाता है कि सभरावां की लड़ाई से पहली रात को तेज सिंघ ने सरदार शाम सिंघ अटारी को भी अपनी गद्दाराना साजिश में शामिल करने का निष्फल यत्न किया और उनको कहा कि वे भी अंग्रेज़ों के पहले हमले के समय उसके साथ ही निकल चलें, मगर सरदार शाम सिंघ अटारी एक अलग किस्म की मिट्टी का बना हुआ था। वह इन भाड़े के ट्टुओं, नमक-हरामों में से नहीं था। वह उस अपना आप कुर्बान करने वाले सरदार निहाल सिंघ का आत्मसम्मानी सुपुत्र था, जिसने महाराजा रणजीत सिंघ के शारीरिक कष्ट दूर करने के लिए खुशी-खुशी अपनी जान दे दी थी। सरदार को सिंघों की हार में अपने वतन की आज़ादी छिनती नज़र आ रही थी।

१० फरवरी को सुबह अंग्रेज़ों ने हमला कर दिया और सिंघ भी आगे से तैयार हो गए। सुबह ही सरदार शाम सिंघ ने सफेद वस्त्र सजा लिए और अपनी खास सवारी— चीनी घोड़ी पर सवार होकर निकल पड़े। इस बारे में कवि मटक लिखता है :

पहिर रात समें इशनान शाम सिंघ,
विच नदी दे करिआ, जपु जी पढ़िआ।
निमसकार करि शसतर पहिरे,
तोड़ा बंदूकी जड़िआ, ज़रा ना डरिआ।
कहित मटक अब जुध धरम का,
शिआम सिंघ रण चढ़िआ, खंडा फड़िआ।

लड़ाई शुरू हो जाने से पहले सरदार शाम सिंघ अटारी ने सिपाहियों को व्याख्यान दिया और समझाया कि आज आपके देश-धर्म के आत्म-सम्मान की परख का समय आ गया है। अगर आप खालसे के सच्चे सुपुत्र हो तो अपने नाम तथा दाढ़ियों को दाग न लगने देना, पुरज़ा-पुरज़ा होकर कट मरना और देश पंजाब की आज़ादी के लिए अपनी जान कुर्बान कर देना, जंग में शत्रु को पीठ न दिखाना।

अंग्रेज़ों ने अपनी तोपों को आग दिखाई। सामने से सिक्खों ने भी गोले दागे। पिछली लड़ाइयों में अंग्रेज सिक्खों के हाथ देख चुके थे। डर उनके दिल में बैठा हुआ था। अंग्रेज़ों ने नई पलटनें सिक्खों पर हमला करने के लिए राबर्ट डिक्क के नेतृत्व में लाल सिंघ के बताए मुताबिक दक्षिणी हिस्से की तरफ भेजीं, परंतु राबर्ट डिक्क को ज़ख्मी होकर पीछे मुड़ना पड़ा। अचानक लाल सिंघ अपनी फौज सहित बिना कोई कारण बताए भाग गया। थोड़ी देर बाद तेज सिंघ भी अपनी ६००० फौज सहित भाग गया और साथ ही बारूद से भरी बेड़ियां दरिया में डुबो गया। पुल भी तोड़ दिया गया। अब फौज फिर बिना जरनैल के थी। तोपचियों की तरफ से शोर मचाया गया कि नई पेटियों में से बारूद की जगह रेत और

सरसों निकल रही है। धीरे-धीरे सिक्ख बिखरने लगे। ठीक इसी समय सफेद नूरानी दाढ़ी और सफेद भेस में सजा सरदार शाम सिंघ अटारी मैदान में पहुंच गया। उसने देखा कि अब शहादत देने का समय आ गया है। उसने खालसा फौज को मर-मिटने के लिए ललकारा :

उट्ठो सूत लौ भगौतीआं सूरिओ,
दिओ वैरीआं दे सत्थर विछा।
शान खालसे दी नाल है पंजाब दे,
किते दोहें ही ना बिहो जे लुटा।
मरना देश लई भला है 'सीतला',
लवो मरतबे शहीदी पा।

सरदार शाम सिंघ के आने से खालसा फौज में नई रूह भर गई। सारे मैदान में सरदार ही दिखाई दे रहा था। जहां सिक्ख फौज विचलित दिखाई देती वहां वह खुद पहुंचता और कहता, ''खालसा जी! हम ये दाढ़ियां लेकर पंजाब में हार कर जाएंगे? अब समय सामने शहीद होने का है।'' सरदार की घोड़ी गोली लगने से मारी गई। दूसरी घोड़ी लेकर सरदार ने वहाबी को पीछे भेज दिया और कहा, ''अटारी (गांव) से कह देना कि शाम सिंघ अब कभी नहीं लौटेगा।'' जब बारूद खत्म हो गया और सरदार को लड़ाई में पराजय होती दिखाई दी तो उसने कृपाण निकाल ली। अपने प्रण को निभाने के लिए वह आगे बढ़ा। जवानों को पंजाब पर से कुर्बान हो जाने के लिए ललकारा। लगभग पचास योद्धा छलांग लगाते हुए सरदार के पीछे चल दिए। अब सरदार अपनी चमकती शमशेर लेकर गोरों पर टूट पड़ा और कइयों को मौत के घाट उतार दिया :

शाम सिंघ सरदार ने, हत्थ फड़ी भवानी।
लिशक डरावे वैरीआं, बिजली असमानी।
उस बुड्ढे जरनैल 'ते, मुड़ चढ़ी जवानी।
ढाडी वारां गाउणगे, जग रहू निशानी।

सिक्ख फौज के इस हमले ने गोरों के पैंतरे हिला दिए, पैर उखाड़ दिए। अंग्रेज़ फौज ने तोपों से पीछे से आग बरसाई। सात गोलियों और संगीनों के अनेक जख्म खाकर सरदार शाम सिंघ अटारी घोड़े से नीचे गिरा और सच्चे शूरवीरों की तरह अपने वतन की आज़ादी हेतु लड़ता हुआ शहीद हो गया। इस तरह सिक्ख राज्य का आखिरी स्तंभ गिर गया।

सरदार शाम सिंघ अटारी ने यह सत्य कर दिखाया कि सब सोच-विचार मैदाने-जंग में जाने से पहले होती है। जब योद्धा मैदान में आ जाता है तो वह दलीलों और गिनती आदि में नहीं पड़ता, बल्कि जान हथेली पर रख कर कुर्बान होता है :

फे-फौज विच बहुत सरदार नामी,
सिफत नहीं कर सकदा कुझ कहिण वाला।
इक दूजे दा सानी चतराई दे विच,
अते लड़ाई विच पिछांह ना रहिण वाला।
ऐपर इक सरदार अजीब यारो,
जखम साहमणे मुंह 'ते सहिण वाला।
कादरयार जहान 'ते नाम रौशन,
शाम सिंघ अटारी दा रहिण वाला।

आज पंजाब की धरती यहां की माताओं की कोख की तरफ आशा भरी नज़रों से देख रही है कि एक और शाम सिंघ जन्म ले तथा पंजाब एवं कौम को उसके हक लेकर दे।

सिक्खी सिदक का प्रतीक : बड़ा घल्लूघारा

–डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल*

अठारहवीं शताब्दी का समय सिक्खों के लिए जबरदस्त संघर्ष का समय था। इस दौर में सिक्खों ने न सिर्फ मुगल बादशाहों और ज़करिया खान जैसे सूबेदारों के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष किया बल्कि नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली जैसे क्रूर विदेशी आक्रमणकारियों से भी जमकर लोहा लिया।

अहमद शाह अब्दाली ने सन् १७४८ ई. से लेकर सन् १७६७ ई. तक भारत पर ताबड़तोड़ अनेक आक्रमण किये। इन हमलों में उसने मुगल सत्ता को पंजाब में से उखाड़ फेंका और लाहौर में अपना सूबेदार नियुक्त कर दिया। उसने सन् १७६१ ई. में पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों को पराजित कर उत्तर–मध्य भारत की राजनीतिक स्थिति को पलट कर रख दिया। अब पंजाब में भी अब्दाली का पूरा कब्ज़ा था।

सिक्खों का प्रभावशाली प्रतिरोध : अब्दाली के इन हमलों में अगर किसी ने अब्दाली को सबसे ज्यादा छकाया और नुकसान पहुंचाया तो वे सिक्ख ही थे। सिक्ख जत्थों में रहते और छापामार लड़ाई लड़ते थे। सिक्ख जत्थे अब्दाली की फौज पर अचानक हल्ला बोलते और पलक झपकते खासा मालमत्ता छीनकर फिर जंगलों में गुम हो जाते थे। सिक्खों ने इस तरह अब्दाली की बहुत सारी दौलत वापस छीन ली जिसे वह भारत से लूटकर अफगानिस्तान ले जा रहा था।

इसी तरह सिक्खों ने अनगिनत स्त्री–पुरुषों को भी अब्दाली के चंगुल से छुड़ाया, जिन्हें वह अपने साथ गुलाम बनाकर ले जाना चाहता था।

सन् १७६१ ई. में पानीपत के तीसरे युद्ध के बाद भी सिक्खों ने अटक–पेशावर तक अब्दाली का पीछा किया और उसे खूब छकाया।

सिक्खों के ज़बरदस्त हमलों से अब्दाली भन्ना गया। उसने अपने सूबेदारों से सिक्खों को समाप्त कर देने को कहा, परंतु सिक्ख जांबाज़ होने के साथ–साथ अत्यंत सूझवान भी थे :

वहि मूरख यों लखै न बात।
पंथ बली को है किम घात।
दस पातशाही लड़त बिताई।
इनकी जड़ नित होत सवाई।
लड़ते मरते वधते जाहि।
मूलों किसे ते नाहि खपाहि।
जिम काटे ते फले गुलाब।
तिम इह वाधे पाइ अजाब।

सिक्खों का लाहौर पर अधिकार : १७६१ ई. में अभी अब्दाली अफगानिस्तान लौटा ही था कि सिक्खों ने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व में लाहौर पर हमला कर उस पर अधिकार

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब–१४११०१, फोन : ९४१७२–७६२७१

कर लिया। अब्दाली द्वारा नियुक्त किया गवर्नर लाहौर छोड़ कर भाग गया।

जनवरी, १७६२ ई. के अंत में अब्दाली को आकलदास के माध्यम से इस घटना का पता चला तो उसने सिक्खों को सबक सिखाने की ठानी।

अब्दाली का आक्रमण : सिक्खों को अब्दाली के हमले की भनक लग गई। उन्होंने अपने परिवारों को मलेरकोटला के पास एकत्र कर दिया। सिक्खों का ख्याल था कि अब्दाली को लाहौर पहुंचने में कम से कम दस दिन जरूर लग जायेंगे, इसलिए वे सोच रहे थे कि अपने परिवारों को मलेरकोटला में सुरक्षित पहुंचाकर, वापिस लाहौर आकर अब्दाली से जंग कर सकेंगे।

परंतु सिक्खों को उस समय बड़ी हैरानी हुई, जब उनके अनुमान के विपरीत अब्दाली तीन दिनों में ही लाहौर आ धमका। अब्दाली का सिपहसालार कासिम खान दो ही दिनों में मलेर कोटला आ पहुंचा।

'तवारीख गुरू खालसा' में ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं कि अभी सुबह का ही समय था। अब्दाली के लश्कर ने सिक्खों और उनके परिवारों को घेरे में ले लिया और कत्लेआम शुरू कर दिया। सिक्ख भी झटपट तैयार हो गये। भले हमला अचानक हुआ था, पर सिक्खों ने डटकर मुकाबला करना शुरू कर दिया :

नाहि ताड़े सुचेते सजे दसतारे।
आन कवेले परै कितड़ै तब सिंघ कहे गिलजे गुलमारे।
ओड़क शीघर सिंघ झटापट तयार भए हित जंग अपारे।
अगेरे होइ लरने लगे सिंघ तुपक तीर चलाए करारे।

सिक्खों का ज़ोरदार संघर्ष : सिक्खों ने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, सरदार चढ़त सिंघ शुकरचक्किया आदि जरनैलों के नेतृत्व में भयानक युद्ध शुरू कर दिया। सिक्ख अपने परिवारों को अब्दाली के लश्कर से बचाना चाहते थे। उन्होंने अपने परिवारों को घेरे में ले लिया, जैसे मुर्गी अपने चूजों को अपने पंखों में छुपा लेती है। भाई रतन सिंघ के अनुसार :

जिम कर कुकड़ी बचिअन छपावै।
फलाइ पंख दुई तरफ रखावै।

अपने परिवारों को घेरे में लेकर सिक्ख शत्रु से युद्ध करते हुए बरनाला शहर की ओर बढ़ने लगे। इतने में अब्दाली के और सिपहसालार भी आ पहुंचे। उसने वली खान, भीखन खान और जैन खान को हुक्म दिया कि सिक्खों को उनके परिवारों से अलग कर, परिवारों पर हमला कर कत्लेआम मचा दो। अब्दाली इस योजना में कुछ सफल भी हुआ। इस हमले में सिक्खों के अनेक परिवार शहीद हो गये।

परंतु सिक्खों ने हौसला नहीं हारा। सिक्खों के सारे जत्थे—भंगी, घन्हईये, शुकरचक्किये, डल्लेवालिये, शहीद, करोड़िये, रामगढ़िये, निशानवालिये आदि सभी इकट्ठे हो गये और एक नई योजना के अनुसार लड़ने लगे।

सिक्ख योद्धा जिस ओर बढ़ जाते मैदान का मैदान साफ हो जाता :

जित वल परत सिंघ भट दौड़ा।
करत तुरकन की तरट्टी चौड़ा।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार सिआम सिंघ और सरदार चढ़त सिंघ शुकरचक्किया ने अच्छे हाथ दिखाये। भयानक जंग होती रही। सिक्ख शहादत की भावना लेकर निरंतर लड़ते रहे।

सरदार जस्सा सिंघ को २२ जख़्म लगे। वे तो कई बार मौत के मुंह में जाते-जाते बचे। इसी प्रकार सरदार चढ़त सिंघ को भी १९ जख़्म लगे :

जसा सिंघ खाए बाई घाए।
तों भी सिंघ जी लड़ता जाए।

बहादुरी से लड़ते हुए सिक्खों को अपनी जान की परवाह तक नहीं थी। सबके शरीर लहू से भीगे हुए थे :

लोहू रंग सभ कपड़े भए।
खेल फाग जन रंग रंगए।

परिवारों की रक्षा करते रहने के बावजूद भी अनेक वृद्ध स्त्रियां व बच्चे अब्दाली के लश्कर के हत्थे चढ़ते रहे। सभी को बेरहमी से कत्ल कर दिया गया।

भयानक युद्ध में भी सिक्ख अपने परिवारों की रक्षा करते हुए बरनाला की ओर बढ़ते रहे।

सिक्खों-अफगानों में एक बड़ी झड़प कुतबा बाहमणी गांव में एक तालाब के पास हुई। थकी-प्यासी दोनों सेनायें यहां पानी पीने पहुंची थीं।

यहां रात घिर आई। अफगानी लश्कर रुक गया। सिक्ख बरनाला शहर की ओर बढ़ते रहे और उन्होंने अंतत: बरनाला पहुंच कर ही दम लिया।

तीस हज़ार सिक्खों की शहादत : सिक्ख इतिहास में इस सारी घटना को 'बड़ा घल्लूघारा' कहकर याद किया जाता है। ५ फरवरी, १७६२ ई. के इस भयानक दिन लगभग तीस हजार सिक्ख शहीद हो गये। भाई रतन सिंघ का कथन है :

पिता हमारे तीस बताए।
रहे सु मर और बचकर आए।
पिता चाचे दोइ हम थे साथ।
उन तै सुन हम आखी बात।

एक अनुमान के अनुसार इस दिन लगभग आधे सिक्ख शहीद हो गये थे। कोई भी ऐसा नहीं था जो जख़्मी न हुआ हो :

सरदार सबै जख़्मी भए,
साबत रहयो न कोइ।
लई शहीदी थी घनन,
गिणती सभन न होइ।

इतना नुकसान होने के बाद भी सिक्ख चढ़दी कला में रहे। निराशा उन्हें छू न सकी। अतिशीघ्र सिक्ख पुन: संगठित होकर फिर तैयार-बर-तैयार हो गये और मई, १७६२ ई. में जैन खान को घेरकर जबरदस्त पराजय दी। इस प्रकार बड़ा घल्लूघारा सिक्ख इतिहास का एक अविस्मरणीय दिन है।

बच्चों के लिए विशेष :

साका श्री ननकाणा साहिब

– सतविंदर सिंघ फूलपुर*

बच्चो ! आपने साका श्री ननकाणा साहिब, साका श्री पंजा साहिब, साका श्री पाउंटा साहिब आदि के बारे में सुना होगा। आज हम इन साकों में से साका श्री ननकाणा साहिब के बारे में बात करेंगे। साका श्री ननकाणा साहिब के बारे में बात करने से पहले हम यह भी जानने की कोशिश करेंगे कि साका कहते किसे हैं और ये साके क्यों हुए?

'साका' किसी ऐसे बहादुरी वाले कार्य को कहते हैं जिसे इतिहास में सदा याद रखा जाये। यह सत्य-धर्म के लिए डटने वाले लोगों पर घटी ऐसी दुखदायी घटना होती है जिसमें लोगों का जानी नुकसान हुआ हो। ये साके बहादुरी तथा शूरवीरता वाले कारनामे होते हैं और ये बहादुर कौमों द्वारा ही होते हैं। सिक्ख इतिहास में ऐसे बहुत-से साके हुए हैं। ये साके गुरुद्वारा साहिबान को महंतों के कब्ज़े से आज़ाद करवाने के लिए हुए। जब हमारे देश पर अंग्रेज़ों का शासन था तब गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध अंग्रेज़ों द्वारा स्थापित किए महंतों द्वारा किया जाता था। ये महंत गुरुद्वारा साहिबान के अंदर गुरु साहिबान की शिक्षाओं के विपरीत गलत काम करते थे, जबकि गुरु के सच्चे सिक्ख गुरुद्वारा साहिबान का बहुत सत्कार करते हैं, क्योंकि उनका गुरुद्वारा साहिबान के साथ बहुत प्यार होता है। इसीलिए सिक्खों द्वारा गुरुद्वारा साहिबान में से महंतों को निकालने के लिए कई साके घटित हुए, जिसमें बहुत-से बच्चों, बुज़ुर्गों, महिलाओं और नौजवानों ने शहादत दी।

अब हम साका श्री ननकाणा साहिब के बारे में बात करेंगे। साका श्री ननकाणा साहिब भी सिक्ख धर्म में घटित साकों में से एक है जो हर साल फरवरी महीने में आता है।

गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब वह पवित्र स्थान है जहां सिक्खों के पहले गुरु श्री गुरु नानक साहिब जी का प्रकाश हुआ था। भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद यह गुरुद्वारा साहिब पाकिस्तान में रह गया।

गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध उस समय महंत नारायण दास के पास था। वह महंत गुरुद्वारा साहिब के अंदर गुरमति मर्यादा के विपरीत गतिविधियां करता था। गुरुद्वारा साहिब की जायदाद को वह अपनी निजी जायदाद समझ कर अय्याशियां करता था। उसका चाल-चलन भी ठीक नहीं था, जिस कारण गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब की बेअदबी हो रही थी।

गुरु के सच्चे सिक्ख इस महंत की गलत गतिविधियों के कारण गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में हो रही बेअदबी से बहुत परेशान थे, क्योंकि गुरु के सच्चे सिक्ख कभी भी अपने गुरु और गुरुद्वारा साहिबान की बेअदबी सहन नहीं कर सकते। इसीलिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने २६ जनवरी, १९२१ ई. को एक फ़ैसला किया कि ४ से ६ मार्च, १९२१ ई. को गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में सारे सिक्ख पंथ का एक बड़ा जलसा बुलाया जाये। इस जलसे के माध्यम से महंत को सभी गलत काम छोड़ कर गुरमति मर्यादा के अनुसार गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध करने के लिए कहा जाये। उधर महंत को इस बात की ख़बर मिल गई कि सिक्ख गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में एक बड़ा पंथक जलसा करने की

*संपादक, फोन : ९९१४४-१९४८४

तैयारी कर रहे हैं। उसे यह डर था कि कहीं इस जलसे में मेरे से गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध छीन कर सिक्ख संगत के हाथ में न सौंप दिया जाये। उसने गुरुद्वारा साहिब के अंदर बड़े ख़तरनाक हथियार, बंदूकें, बाँके, कृपाणें, छवियां, गंडासे, मिट्टी का तेल आदि सामान इकट्ठा कर लिया और बहुत-से बदमाशों को गुरुद्वारा साहिब बुला लिया। वह चाहता था कि जब सिक्ख गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब आएंगे तो मैं इन बदमाशों से हथियारों द्वारा सिक्खों को मरवा दूंगा।

भाई लछमण सिंघ धारोवाली और स. करतार सिंघ झब्बर को जब महंत की सिक्खों को मारने वाली इस योजना का पता चला तो उन्होंने फ़ैसला किया कि पंथक जलसे के लिए निश्चित समय से पहले ही गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पहुंच कर महंत को ऐसा गलत काम करने से रोका जाये। भाई लछमण सिंघ धारोवाली और स. करतार सिंघ झब्बर अपने-अपने जत्थे लेकर गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब की तरफ चल पड़े। जब इन जत्थों के जाने का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी वालों को पता चला तो मास्टर तारा सिंघ और स. तेजा सिंघ समुंदरी ने इन जत्थों को रोकने के लिए भाई दलीप सिंघ को भेजा। वे रोकना इसलिए चाहते थे क्योंकि महंत इन जत्थों के सिक्खों को कहीं नुकसान न पहुंचा दे। भाई दलीप सिंघ स. करतार सिंघ झब्बर के जत्थे को रोकने में तो कामयाब हो गए, परन्तु भाई लछमण सिंघ धारोवाली के जत्थे को न रोक सके।

भाई लछमण सिंघ धारोवाली १५० सिक्खों के जत्थे सहित २० फरवरी, १९२१ ई. को प्रातः काल श्री ननकाणा साहिब पहुंचे। इस जत्थे में बच्चे, महिलाएं, नौजवान और बुज़ुर्ग शामिल थे और ये सभी निहत्थे थे। इस जत्थे को आते देख महंत और उसके गुंडे पहले से की गई तैयारी के अनुसार अपने-अपने ठिकानों में छिप कर बैठ गए। गुरुद्वारा साहिब में जत्थे की संगत ने दीवान सजा लिया। कुछ सिंघ कीर्तन करने लगे, कुछ सेवा करने लगे। भाई लछमण सिंघ धारोवाली श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी में बैठ गए। इस तरह बाणी पढ़ते और सेवा करते सिक्खों पर महंत ने अपने गुंडों से हमला करवा दिया। बंदूकों, कुल्हाड़ियों और गंडासों से कोह-कोह कर सिक्खों को शहीद किया गया। भाई लछमण सिंघ धारोवाली को जंड के पेड़ के साथ बांध कर जिंदा जला कर शहीद किया गया। इस साके में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पवित्र बीड़ को भी गोलियां लगीं। जब सिक्खों को इस भयानक साके का पता चला तो सिक्ख जगत में भारी आक्रोश पैदा हो गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी श्री अमृतसर तथा अन्य पंथक जत्थेबंदियों के नुमाइंदे और बड़ी संख्या में सिक्ख गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पहुंचने शुरू हो गए।

सिक्खों के आक्रोश के आगे झुकते हुए अंग्रेज़ सरकार ने गुरुद्वारा साहिब की चाबियां सिक्ख नुमाइंदों को सौंप दीं। इस साके में शहीद हुए समूह सिक्खों का गुरु-मर्यादा के अनुसार अंतिम संस्कार किया गया। इस तरह सिक्खों ने अपनी शहादत देकर गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को महंतों के कब्ज़े से आज़ाद करवाया।

इस साके के शहीदों की याद में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर द्वारा १९२७ ई. में श्री अमृतसर में एक कॉलेज खोला गया। इसका नाम 'शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज' रखा गया। सिक्ख बच्चे इस कॉलेज में धर्म की विद्या पढ़ कर गुरु साहिब की शिक्षाओं का प्रचार करते हैं। हमें भी दुनियावी शिक्षा के साथ-साथ धर्म की विद्या लेनी चाहिए और अपने जीवन को विशुद्ध बना कर बुराइयों को ख़त्म करने के लिए यत्नशील रहना चाहिए। इस तरह हम साका श्री ननकाणा साहिब के शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि भेंट कर सकते हैं।

बच्चों के लिए विशेष :

जैतो के मोर्चे की गाथा

-ज्ञानी सुरिंदर सिंघ निमाणा*

प्यारे बच्चो! आपको यह तो पता ही है कि सिक्ख धर्म की बुनियाद श्री गुरु नानक साहिब जी ने रखी थी। गुरु जी ने इस धर्म की बुनियाद सत्य के आधार पर रखी थी। आपने हर तरह के झूठ को ख़त्म करने की कोशिश की। आपके सिक्खों ने आपके पद-चिन्हों पर चलते हुए सत्य का रास्ता अपनाया। बच्चो! सत्य पर चलना बहुत कठिन होता है। इस पर चलते हुए बड़े दुख सहन करने पड़ते हैं। गुरु के सिक्ख सत्य का रास्ता ही अपनाते हैं। पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी और नौवें गुरु श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने सत्य के मार्ग को नहीं छोड़ा। उन्होंने अपनी जान कुर्बान कर दी थी।

सत्य के पक्के राही सिक्खों ने बीसवीं सदी में सही पक्ष का साथ देते हुए बहुत बड़ा मोर्चा लगाया। यह था— जैतो का मोर्चा। इस समय हमारे देश पर अंग्रेज़ों का कब्ज़ा था। दरअसल अंग्रेज़ व्यापारी बन कर आए थे। चालाक और शक्तिशाली होने के कारण उन्होंने यहां पर अपने पैर जमा लिए। उनको पंजाब पर शासन कायम करने में बहुत मुश्किल पेश आई। कारण? यहां महाराजा रणजीत सिंघ का शासन था। महाराजा रणजीत सिंघ बहुत शक्तिशाली होने के बावजूद ख़ुद को गुरु का अदना-सा सेवक समझते थे। बच्चो! क्या आपको पता है कि श्री हरिमंदर साहिब पर सोना लगवाने की सेवा इसी महाराजा ने की थी। इस महान सेवा का उन्हें जरा भी अभिमान नहीं था।

अब हम जैतो के मोर्चे के इतिहास के बारे में जानने की तरफ आते हैं। 'जैतो' पंजाब का एक कसबा है, जो कि जिला फरीदकोट में है। कसबा एक छोटा शहर होता है। सिक्ख इस कसबे को बहुत प्यार करते थे। आप पूछोगे, वो क्यों? बच्चो! यह वो नगर था जहां दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी आए थे। 'जैतो' सिक्ख रियासत नाभा में पड़ता था। यह कसबा पंजाब के प्रसिद्ध बड़े शहरों बठिंडा-फरीदकोट मार्ग पर स्थित है। यह बठिंडा से २७ किलोमीटर की दूरी पर है।

बच्चो! शायद आपको यह पता हो कि अंत में 'बांटो और राज्य करो' की नीति द्वारा अंग्रेज़ों ने पंजाब पर भी अपना कब्ज़ा जमा लिया, परन्तु कुछ रियासतों पर उन्होंने सिक्ख महाराजाओं को ही राज्य करने का हक दे दिया था। ऐसी ही एक सिक्ख रियासत 'नाभा' थी।

अति चालाक और मक्कार अंग्रेज़ अपनी गंदी चालें चलते ही रहे। वे अपना ईसाई धर्म फैलाना चाहते थे। इस मकसद को पूरा करने के लिए वे हमारे पवित्र गुरुद्वारा साहिबान में से भी सत्य को

*प्रमुख, एवरग्रीन साइंस एंड स्पोर्ट्स स्कूल, अच्चल साहिब (चाहल कलां), जिला गुरदासपुर, फोन : ८८७२७-३५१११

मिटाने पर तुले थे। उन्होंने यहां महंतों का कब्ज़ा करवा दिया। महंतों ने हर तरह का बुरा कर्म पवित्र गुरुद्वारा साहिबान में किया। इनको दूर भगाने के लिए जागृत और सच्चे धार्मिक सिक्ख आगे आए। उन्होंने 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' चलाई। कितनी अजीब बात है कि जिन गुरुद्वारा साहिब में जाकर सिक्ख ख़ुद को गुरु की गोद में बैठा महसूस करता है, उनका प्रबंध इतना बिगड़ गया कि 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' चलानी पड़ी। सिक्खों की अपनी चुनी हुई कमेटी अस्तित्व में आई। यह शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी थी। उत्साही और जागृत सिक्खों ने श्री ननकाणा साहिब के साके में शहादत दी थी।

नाभा रियासत का राजा सरदार रिपुदमन सिंघ था। यह अच्छा राजा तो था ही, इसके साथ धार्मिक सिक्ख के गुण भी रखता था। यह राजा गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का समर्थक था। इसका महाराजा पटियाला के साथ विवाद अर्थात् झगड़ा चल रहा था। अंग्रेज़ हुकूमत पटियाला के महाराजा के साथ थी। इसका परिणाम यह निकला कि ९ जुलाई, १९२३ ई. को सरदार रिपुदमन सिंघ को गद्दी छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया गया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी महाराजा रिपुदमन सिंघ के हक में डट कर खड़ी हो गई। इसने अंग्रेज़ों द्वारा की जी रही धक्केशाही के विरुद्ध आवाज़ उठाई। जलसे हुए। जुलूस निकाले गए। सिक्खों का राजनीतिक दल अकाली दल था। धार्मिक संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी थी। अंग्रेज़ सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल के लगभग ६० सदस्य १३-१४ अक्तूबर, १९२३ ई. की रात को गिरफ़्तार कर लिए। यह एक और धक्केशाही थी।

इस धक्केशाही के ख़िलाफ सिक्ख चुप कैसे बैठ सकते थे! उन्होंने १४ सितंबर, १९२३ ई. को जैतो में स्थित गुरुद्वारा गंगसर साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ कर दिया। सिक्खों का श्री गुरु ग्रंथ साहिब पर पूरा भरोसा है। वे इसको जाग़त-ज्योति गुरु मानते हैं। किसी भी बड़े संकट के समय वे श्री अखंड पाठ साहिब करते हैं। मगर सरकार ने देखो क्या किया! उसने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पवित्र बीड़ ही वहां से उठवा दी और पाठी सिंघों को भी साथ ही उठा दिया। गुरुद्वारा साहिब में संगत के दाख़िल होने पर पाबंदी लगा दी। यह अन्याय की आखिरी हद थी। इस हालत में सिक्खों को मोर्चा लगाना पड़ा। कई बार दूसरे लोग सिक्खों पर व्यंग्य वाली टिप्पणी करते सुने जाते हैं कि सिक्ख मोर्चे बहुत लगाते हैं। यह जान लो कि सिक्ख कभी बिना कारण मोर्चा नहीं लगाते।

सिक्खों ने यह संगती फ़ैसला किया कि श्री अखंड पाठ साहिब पुनः शुरू किया जाये। खंडित किया गया श्री अखंड पाठ साहिब वे कैसे सहन कर जाते! २५ सितंबर, १९२३ ई. से श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर से हर रोज़ २५-२५ सिंघों के जत्थे जाने लगे। सरकार को हाथों-पैरों की पड़ गई। सरकारी आदमी सिंघों को पकड़

लेते। पकड़ कर दूर-दराज़ जंगलों में छोड़ आते। सफलता हासिल नहीं हो रही थी। इस हालत में सिक्खों को और बड़ा फ़ैसला लेना पड़ा।

९ फरवरी, १९२४ ई. का दिन था। इस दिन जत्थेदार ऊधम सिंघ गोहलवड़ की जत्थेदारी में ५०० सिंघों का जत्था श्री अकाल तख़्त साहिब से चला। यह पैदल चलता हुआ २१ फरवरी, १९२४ ई. को गुरुद्वारा टिब्बी साहिब, जैतो पहुंचा। इस तरह सारा सिक्ख पंथ एकजुट हो गया था।

उस समय की अंग्रेज़ सरकार का खून सूखने लगा। जालिम सरकारें अपनी जिद से पीछे न हटने में अपनी बहादुरी समझा करती हैं। सरकार की अत्याचारी पुलिस की तरफ से जत्था रोकने की कोशिश की गई। सिंघ तो हर कुर्बानी के लिए तैयार थे। जब जत्था रोकने से न रुका तो इतने बड़े जत्थे पर गोली चला दी गई। फलस्वरूप १०० सिंघों की शहादत हुई। उनका सामूहिक अंतिम संस्कार किया गया। उनकी अस्थियों को एक घड़े में डाल कर गुरुद्वारा अंगीठा साहिब वाली जगह पर रख दिया गया।

बाकी के सिंघ गिरफ़्तार कर लिए गए। इस गोलीकांड के विरुद्ध सारे देश में सिक्खों के प्रति हमदर्दी पैदा हुई। जालिम सरकार के विरुद्ध तीखा आक्रोश पैदा हुआ। आज़ादी के लिए चल रही राष्ट्रीय लहर को बल मिला। यह बात कितनी फख्र करने योग्य और विलक्षण है कि सिंघ जत्थों के रूप में आने से फिर भी रोके न जा सके। कनाडा, हांगकांग और शिंघायी जैसे देशों से जहां गुरु के सिंघ जाकर बसे थे, वहां से भी जत्थे जैतो पहुंचते रहे। आखिर, अंग्रेज़ सरकार ख़ुद समझौता करने के लिए झुकी। परिणामस्वरूप गुरुद्वारा एक्ट पारित हुआ। नवंबर, १९२५ ई. में यह लागू किया गया।

९ जुलाई को जैतो में श्री अखंड पाठ साहिब करने की छूट दी गई। २१ जुलाई, १९२५ ई. को एक सौ एक श्री अखंड पाठ साहिब की लड़ी शुरू की गई। ६ अगस्त को इसका भोग पड़ा। भोग के पश्चात् ९ अगस्त, १९२५ ई. को सिक्ख पंथ की तरनतारन नगर में सभा हुई। चाहे बड़ी कुर्बानियां करनी पड़ी, परंतु फतह सिक्ख पंथ को ही नसीब हुई। इस फतह के शुक्राने के तौर पर एक ऐतिहासिक जुलूस वहां से चल कर श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर पहुंचा। जत्थों में हिस्सा लेने वाले सिंघों को सम्मानित किया गया। सरकार ने पूरी तरह से झुकते हुए गिरफ़्तार किये गए सभी सिंघों को रिहा कर दिया था।

आख़िर, जैतो का मोर्चा सिंघों के सब्र, संतोष और उनकी बड़ी कुर्बानियों का सूचक बना। इस ऐतिहासिक मोर्चे पर हम जितना फख्र करें, उतना कम है।

'सिध गोसटि' बाणी और योग मत

-स. बलविंदर सिंघ जौड़ा सिंघा*

सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित 'सिध गोसटि' बाणी में श्री गुरु नानक देव जी ने गोसटि (गोष्ठि) को आधार बना कर अपने आध्यात्मिक विचारों को प्रकट किया है। 'सिध गोसटि' बाणी दार्शनिक पक्ष से श्रेष्ठ है, चाहे वह पक्ष परमात्मा, सृष्टि-रचना, मानव या सुन्न अवस्था से संबंधित है या दार्शनिक संप्रदाय (योगा पतंजलि) की नवीन व्याख्या से। 'सिध गोसटि' उत्तम पेशकारी का नमूना प्रस्तुत करती है। इसमें श्री गुरु नानक देव जी ने सिधों-नाथों की शारीरिक क्रियाओं की जगह 'नाम' में तन्मय होकर सहज अवस्था का आनंद मानते हुए परम सत्ता में गुरमति के अनुसार विलीनता का ढंग बताया है।

सिधों और योग से संबंधित संक्षिप्त परिचय : गुरबाणी में सिध, योगी, नाथ, अवधूत आदि समानार्थी शब्द हैं। नाथ संप्रदाय से संबंधित प्रसिद्ध विद्वान डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार :—

''ब्रह्मनन्द इस सम्प्रदाय को नाथ सम्प्रदाय नाम से ही जानते थे। भिन्न-भिन्न ग्रंथों में यह वर्णन मिलता है कि यह मत 'नाथोकत' अर्थात् नाथों द्वारा रचित है, परंतु संप्रदाय में से ज़्यादा प्रचलित शब्द सिध मत, सिध मार्ग, योग सम्प्रदाय और मार्ग योग अवधूत सम्प्रदाय हैं। इस मत के योग मत और योग संप्रदाय नाम ही सार्थक हैं, क्योंकि इसका मुख्य धर्म ही योग अभ्यास है। अपने मार्ग को ये लोग सिध या सिध मार्ग इसलिए कहते हैं कि इनके मत के नाथ ही सिध हैं। सिद्धि प्राप्त कर चुके नाथ को ही सिध कहा जाता था।''[१]

सिध योगियों का प्रसिद्ध और प्रमाणिक ग्रंथ 'सिध सिद्धांत पद्धति' है।[२] 'नाथ' के बारे में डॉ. द्विवेदी वर्णन करते हैं कि :—

''यह सिध मार्ग नाथ मार्ग ही है। 'ना' का अर्थ है— अनादि रूप और 'थ' का अर्थ है— तीनों भवनों में स्थापित होना। इस तरह नाथ का अर्थ वह अनादि भवन है जो तीनों की स्थिति का कारण है।''[३]

डॉ. सरनाम सिंघ 'शर्मा' ज़िक्र करते हैं :—

''नाथ पंथ वज्रयान और सहजयान की ही प्रतिक्रिया मानी जाती है। राहुल जी ने तो नाथ पंथ के प्रधान आचार्य गोरख नाथ को वज्रयान का ही आचार्य कहा है। वैसे तो इस संप्रदाय के 'पहले संस्थापक' भगवान शंकर माने जाते हैं, परंतु इसके पुनर्निर्माण का श्रेय गोरख नाथ के सिर ही माना जाता है। इस संप्रदाय का जन्म सिधों के वीभत्स, तामसिक साधना-प्राप्ति की प्रतिक्रिया के रूप में होने से इसमें सदाचार को विशेष महत्व दिया गया है। किसी समय इस संप्रदाय का बड़ा प्रभाव था। अनेक स्वर्ण और अवर्ण लोग इसके चेले थे, परन्तु अवर्णों में इनका प्रभाव ज़्यादा था। इस संप्रदाय का प्रभाव उत्तरी-पश्चिमी भारत में ज़्यादा था।''[४]

*पूर्व सचिव, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६, फोन : ९८१४८-९८२१२

भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार :—

''योग चित्त की वृत्तियों (मन, बुद्धि, अहंकार) को रोकने का नाम है।''[५]

भाई वीर सिंघ ने योग के बारे में ज़िक्र करते हुए कहा है :—

''योग संस्कृत योग धातु 'युज' से बना है, जिसका अर्थ है— जुड़ना। योग भारतीय मार्ग में योग साँई के साथ जुड़ना है। पंजाबी में योग चित्त एकाग्र होना, चित्त की वृत्तियों का निरोध है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यह विधि और निषेध पक्ष, दोनों स्थान पर आया है। निषेध वहां है जहां इसका मतलब आसन लगाने, न्युली कर्म करने, शरीर को कष्ट देने, कान छेदने और वहमी क्रिया (क्रियायों) में पड़ कर कानों या आँखों की नाड़ियों के दबाव से विलक्षण दशा की उत्पत्ति करनी तांत विद्यान्यास (विद्या अनुसार) यत्न करता है। उस योग की निंदा की है जो कान फड़वा कर शराब आदि का सेवन कर योगी कहलवाते हैं। जहां विधि पक्ष आता है वहीं भाव होता है— ईश्वर की आत्मिक पूजा, ईश्वर के गुणान-वाद-ध्यान, सांसारिक त्याग, हठ, तपन या शरीर को कष्ट देने की ज़रूरत नहीं होती, क्योंकि इसमें केवल सांसारिक विकारी ख़ुशी तथा पीड़ा से विरक्त चित्त के द्वारा एक ईश्वर पर ध्यान करती है और विचार के साथ बुद्धि को उज्जवल करते हैं। वैराग्य, सुधा, प्रेम इसके उपयोगी हैं। 'नाम' में लगना इसका मुख्य प्रयास है।''[६]

श्री गुरु नानक देव जी के समय प्रचलित योग और उसका प्रभाव : पंजाब में योगियों के प्रभाव के बारे में डॉ. गरेवाल लिखते हैं— ''१५वीं सदी में गोरख-पंथियों (सिध-नाथों) की विचारधारा पंजाब में पहुंच चुकी थी और पंजाब में इनके डेरे (टिल्ले)— गोरख नाथ का टिल्ला ज़िला जेहलम, गोरख हटड़ी, माखादा, कटास, जखबड़, किड़ाणा, कोहाट, बावाना, जो बहार, अचल (बटाला), काहनूंवान, भेरा आदि स्थानों पर स्थापित हो चुके थे।''[७]

श्री गुरु नानक देव जी का समय उथल-पुथल का समय था। चारों तरफ़ राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक वातावरण का तानाबाना उलझा हुआ था। ऐसे समय में पंडित, काज़ी और योगी, युक्ति के बिना उजाड़े का रूप बने हुए थे अर्थात् जनता की लूट-मार कर रहे थे।''[८]

हम गुरु साहिब की बाणी और विशेष तौर पर 'सिध गोसटि' के आधार पर ही श्री गुरु नानक देव जी के समय प्रचलित योग की व्याख्या करने का यत्न करेंगे। कुछ विस्तार के लिए भाई गुरदास जी की वारों, जिन्हें गुरबाणी की कुंजी माना जाता है, का भी वर्णन करेंगे। 'सिध गोसटि' में लोहारीपा नामक एक योगी ने योग के ज्ञान-मार्ग के बारे में चर्चा करते हुए कहा है कि :—

''सांसारिक झमेलों से दूर जंगलों आदि में रहना, गाजर-मूली आदि का भोजन करना, तीर्थों पर स्नान करना ही योग-युक्ति है, योग की विधि है और इससे ही सुख मिलता है, मन को भी कोई मैल नहीं लगती।''[९]

योग धारण करने के तरीके के बारे में योगी ने कहा कि :—

''योगी राज (जोगिंदा) भेस धारण कर, कानों में मुंदराएं (मुद्रा) और गोदड़ी (खिंथा) पहन कर, योगियों के बारह भेसों (रावल, हेतू, पाल, आई, रामय, पागल, गुपाल, कंबड़ी, बन, ध्वज, चोली दास पंथ) में से 'आई पंथ' को धारण करना योग धारण करने की विधि है।''[१०]

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार :— ''योगी और सन्यासी सांसारिक खुशियां त्याग कर जंगलों में कंद-मूल खाकर गुज़ारा करते रहते थे।''[११]

''सिध योगी अपने आप को यति-सती तो कहते थे, परन्तु वे बिना कोई युक्ति जाने घर-बार छोड़ बैठे थे।''[१२]

भाई गुरदास जी भी पहली वार में इन योगियों की दयनीय हालत के बारे में वर्णन करते हैं कि:—

''यति-सती, साधक, सिद्ध, नाथ आदि सब गुरु और चेले अहंकार के कारण इस संसार सागर में डूबे हुए थे। गुरमुख मनुष्य ढूँढने से भी नहीं मिल रहा था।''[१३]

इस तरह उपरोक्त विवेचन से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सिध योगियों के उत्तरी और पश्चिमी भारत में आम तौर पर तथा पंजाब में ख़ास कर प्रभाव था। उस समय योगी करामात आदि दिखा कर लोगों को अपने पीछे लगा रहे थे। योगियों के इन कामों (करामात दिखा कर लूटमार करनी) के कारण ही श्री गुरु नानक साहिब का ध्यान योगियों की तरफ आकर्षित हुआ और गुरु जी ने योगियों के साथ संवाद किया।

योगियों की आलोचना क्यों?

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के अध्ययन से पता चलता है कि श्री गुरु नानक देव जी किसी धर्म के विरोधी नहीं थे। वे केवल धर्म में आ चुकी बुराइयों का विरोध करते थे। वे हिंदू को अच्छा हिंदू, मुसलमान को अच्छा मुसलमान और योगी को अच्छा योगी बनने के लिए प्रेरित करते थे। उनका योगियों की आलोचना करने का मुख्य कारण यह था कि उनके समय में योगियों ने रिद्धियों-सिद्धियों और करामातों से लोगों को अपने पीछे लगाया हुआ था। ज्ञान-विहीन जनता योगियों की तांत्रिक करामातों के कारण उनके प्रभाव में आ चुकी थी। भाई गुरदास जी की वारों में चर्चा है कि:—

''श्री गुरु नानक देव जी के समय संसार में से सत्य की रोशनी ख़त्म हो चुकी थी। झूठ की रात छायी हुई थी। झूठ अमावस की रात की भांति फैल चुका था। धरती पाप से इतनी ग्रस्त हो चुकी थी कि धरती के नीचे का धर्म-रूपी बैल चीख रहा था। सिध पर्वतों में छिपे बैठे थे और ज्ञान-विहीन योगी अंगों पर राख मल कर बैठे रहते थे।''[१४]

नाथ योगियों के काम के बारे में ज़िक्र करते हुए भाई गुरदास जी वर्णन करते हैं कि :—

''नाथों-योगियों का काम केवल सिर मुंडाने, कान छिदवाने, शरीर पर राख मल कर, खिंथा पहन कर, खप्पर और डंडा लेकर सिंङी बजाते हुए घर-घर से रोटी मांगने तक रह गया था।''[१५]

सिधों की करामातों की चर्चा करते हुए भाई गुरदास जी बयान करते हैं कि :—

''शिवरात के मेले पर जब श्री गुरु नानक देव जी अचल (बटाला) आते हैं तो सिध कई तरह की करामातें करते हैं। वे (योगी) तंत्र-मंत्र बोलते हुए शेर, पक्षी, मृग आदि बनते या आग की वर्षा करते हैं।''[१६]

श्री गुरु नानक देव जी ने रिद्धियों-सिद्धियों को दूसरी दिशा का स्वाद कहा और उपदेश किया कि इनके बहकावे में आकर नाम से चूक नहीं जाना चाहिए।

श्री गुरु नानक देव जी परमात्मा के हुक्म या रज़ा को इतनी महत्ता देते हैं कि वे उस समय के हुक्म के विपरीत किसी ताकत को ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं मानते। इस कारण योगियों का रिद्धियों-सिद्धियों

तथा करामातों से लोगों को प्रभावित करना उनको भाता नहीं। श्री गुरु नानक देव जी योगियों की इस पक्ष से भी कड़ी आलोचना करते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार वास्तविक योग : श्री गुरु नानक देव जी ने योगियों द्वारा बताए मार्ग और चिन्ह (जैसे-संसार त्यागना, कान छिदवाना, झोली डालनी, भूखे रहना और भेस आदि) धारण करने को जीवन का आदर्श नहीं माना, क्योंकि श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार:—

''मनुष्य को घर-बारी रहते हुए अविद्या की नींद के बिना अपने स्वरूप में इस तरह टिकना चाहिए कि पराए घर में (बाहरी पदार्थों के साथ) अपने मन को डगमगाने न दिया जाये। यही वास्तविक योग है।''[१७]

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार :—

''योग की प्राप्ति गोदड़ी पहनने, डंडा रखने, राख मलने, मुंदरा पहनने, सिर मुंडाने, सिंङी बजाने आदि में नहीं होती और न ही इसकी प्राप्ति बातों से, मढ़ी-मशानों में जाने से, समाधि लगाने से और तीर्थ-स्नान करने से होती है।''[१८]

श्री गुरु नानक देव जी बयान करते हैं :—

''नाम के बिना मन टिक कर नहीं रह सकता और माया की तृष्णा हटती नहीं।''[१९]

मन की स्थिरता और माया की तृष्णा दूर करने का ढंग बताते हुए श्री गुरु नानक साहिब बयान करते हैं कि :—

''अगर मनुष्य दुनियावी धंधों से अचल रह कर श्री गुरु नानक देव जी के बताए स्वरूप की दुकान में सहजता के साथ सत्य का व्यापार करता है, थोड़ा सोता है और ख़ुराक भी थोड़ी खाता है, उस मानव का मन टिक जाता है और माया की तृष्णा दूर हो जाती है।''[२०]

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार वास्तविक योग तो गुरु के सम्मुख होने से ही प्राप्त हो सकता है। योग धारण करने की विधि श्री गुरु नानक देव जी योगियों की भाषा में ही बताते हुए कहते हैं कि :—

''शबद को हृदय में बसाना कानों में मुंदरा पहनने के बराबर है। यह शबद रूपी मुंदरा धारण करने से अहंकार और मोह दूर हो जाता है, पांचों विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) मिट जाते हैं। परमात्मा को सब जगह व्यापक समझना गोदड़ी (खिंथा) और झोली पहनने के बराबर है।''[२१]

गुरु साहिब और बयान करते हैं कि :—

''सांसारिक ख्वाहिशों की तरफ से मुड़ी हुई चेतना ही वास्तविक खप्पर (योगी का प्याला) मानना चाहिए और पाँच तत्वों (आकाश की निष्पक्षता, अग्नि का स्वभाव मैल जलाना, धरती का धीरज, पानी की शीतलता, हवा की समदृष्टता) के दैवी गुण धारण करने टोपी पहनने के तुल्य हैं। शरीर को विकारों की आग से निर्लिप्त रखना, योगी के दब-आसन के बराबर है। मन पर काबू, उसकी लंगोटी है और सत्, संयम व संतोष उसके तीन चेले हैं।''[२२]

इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार कर्मकांड व्यर्थ हैं और आध्यात्मिक तथा नैतिक कीमतों की प्राप्ति ही वास्तविक योग है। 'सिध गोसटि' के अलावा 'जपु जी साहिब' में भी श्री गुरु नानक साहिब ने योगियों को धर्म के असल उद्देश्य के बारे में सचेत किया है। गुरु साहिब किसी के धार्मिक होने की निशानी यह मानते हैं कि उसने मन के ज्योति-स्वरूप होने की पहचान कितनी बताई है; जीवन-जाच सीख कर जीवन की समस्याओं को कितना हल कर लिया है। वह सही अर्थों में कितना

मानव बन गया है। योगियों के धार्मिक चिन्हों के इस्तेमाल के रूपक द्वारा गुरु साहिब जीवन के असली आदर्श के बारे में बताते हुए कहते हैं कि :—

''कानों में मुंदराएं संतोष की हों, खप्पर और झोली उद्यम की हो, प्रभु में ध्यान की राख शरीर पर लगाई हो, मौत का ध्यान खफनी की तरह याद रहे। योग की रीति ऐसी हो कि शरीर को पवित्र समझा जाये और मानव का निश्चय योगी के डंडे की तरह लगे, सब लोगों को आई पंथ का रूप जान कर, मन पर विजय प्राप्त कर ही संसार को जीता जा सकता है।''[२३]

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार ''सच्चा योगी वही है जो जीवन की सही युक्ति को जानता है। कामादिक पांच चोरों को मार कर सत्य को हृदय में बसाना ही असली योग है। जिस मानव के अंदर सत्य हो वही वास्तव में योग की युक्ति को समझ सकता है।''[२४]

''वही योगी पूर्ण होता है जो क्षमा धारण करता है। मीठा स्वभाव और संतोष जिसके नित्य कर्म हैं। उसे अहंकार का रोग और यम का डर नहीं होता। वह रूप-रेख की कैद से मुक्त होता है, क्योंकि परमात्मा का कोई भी रूप-रेख नहीं। जो असली योगी है वह गृहस्थ में भी बिना किसी डर, माया के निर्लिप्त रह कर परमात्मा का नाम-सिमरन करता है। ऐसा योगी ही स्वीकृत होता है और मन को अच्छा लगता है।''[२५]

श्री गुरु नानक साहिब भी अपने आप को एक योगी बताते हैं, परन्तु उनके योग का रूप निराला है। गुरु जी के अनुसार, ''असली योगी की चेतना में शबद ही गूंजता है। गुरु की शिक्षा सिंङी (स्पंदन) की तरह है और जब यह बजती है तो सारा लोक सुनता है। असली योगी मांगने के लिए हृदय को खप्पर और झोली बनाता है, जिसमें नाम की भिक्षा पड़ती है।''[२६]

श्री गुरु नानक साहिब के अनुसार वास्तविक योगी वही है— ''जो पांच विकारों को वश में कर योग की ऐसी युक्ति प्राप्त कर लेता है, जिससे वह खुद भी पार उतरता है और अन्य लोगों को भी पार लगा लेता है।''[२७]

गुरु नानक साहिब ''हठ योग करने, व्रत रखने, तन तपाने, श्वासों को दशम द्वार तक चढ़ाने तथा खट कर्म करने, तीर्थ-रटन करने का विरोध करते हैं और कहते हैं कि उपरोक्त काम करने का कोई लाभ नहीं। वास्तव में परमात्मा का नाम ही सभी रोगों का दारू है।''[२८]

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा की गई योग की व्याख्या को स्पष्ट करने के लिए गुरु जी के 'सिध गोसटि' में वर्णित परमात्मा, गुरु, गुरमुख-मनमुख शबद और नाम के संकल्प की व्याख्या आवश्यक प्रतीत होती है। इस व्याख्या में उपरोक्त संकल्पों के बारे में गुरु जी और योगियों के मतभेदों की भी 'सिध गोसटि' के आधार पर चर्चा की जायेगी।

परमात्मा : 'सिध गोसटि' में श्री गुरु नानक साहिब परमात्मा से संबंधित विचारों को चर्चा का विषय बनाते हैं।

''सिध योगी अपना निशाना मानव के पत्थर रूप होने तक, जिसे वे 'कैवल्य' का नाम देते हैं, तक रखते और अनहद नाद सुनने तक ही मुक्ति समझते हैं।''[२९]

मगर श्री गुरु नानक साहिब का असली निशाना परमात्मा में विलीनता का था। गुरु साहिब के अनुसार :—

''निर्गुण (सुन्न) प्रभु अंदर भी है, बाहर भी है और वह तीनों भवनों (आकाश, धरती, पाताल) में समाया हुआ है।''[३०]

परमात्मा गुप्त भी है। सारी सृष्टि अविनाशी प्रभु का खेल है। साधना करने वाले साधक, साधना में रमे हुए योगी, गुरु और उनके चेले परमात्मा को खोजते फिरते हैं और उसके नाम की भिक्षा मांग रहे हैं।''[३१]

गुरु : सिध योगी गुरु में विश्वास रखते थे। वे गुरु की शिक्षा के माध्यम से रिद्धियां-सिद्धियां प्राप्त कर मुक्ति का साधन ढूंढते थे। श्री गुरु नानक देव जी ने भी 'गुरु' की आवश्यकता पर बल दिया। गुरु ही वास्तविक योग की युक्ति बताता है। श्री गुरु नानक देव जी का गुरु सतिगुरु है (अर्थात् गुरु और परमात्मा में आप कोई फर्क नहीं समझते)। सतिगुरु के मिलाप से अज्ञानता का अंधेरा दूर हो जाता है।

''सतिगुरु के बिना न नाम मिलता है, न मुक्ति और न अज्ञानता का अंधेरा दूर होता है, बल्कि मानव ज़िंदगी का खेल हार कर आत्मिक मौत सहेजता है।''[३२]

''गुरु के बिना मानव भटकन में पड़ कर जन्म लेता और मरता रहता है। गुरु के बिना माया का मोह सांप के डंक की तरह डसता है और गुरु के बिना घाटा ही घाटा है।''[३३]

श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि :

''गुरु सब अवगुण दूर कर गुणों के साथ संसार-सागर से पार उतारा करवा देता है।''[३४]

''सतिगुरु के मिलने से मुक्ति का रास्ता भी आसान हो जाता है।''[३५]

इस तरह उपरोक्त के आधार पर श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार गुरु ऐसा होना चाहिए जो मोह-माया के जाल से बचा कर, अवगुण मिटा कर संसार-सागर से पार कर दे और जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति हासिल करवाए। सच्चा गुरु मिल जाना अपने आप में महत्वपूर्ण है। झूठे गुरु के पीछे लगा मनुष्य गलत रास्ते पर चल रहा होता है।

गुरमुख और मनमुख :— 'सिध गोसटि' में श्री गुरु नानक देव जी ने गुरमुख और मनमुख की व्याख्या की है। गुरु जी ने गुरमुख मनुष्य की तुलना (पूर्ण) योगी से की है। इस प्रकार गुरमुख का वर्णन आदर्श योगी का वर्णन है। गुरमुख के बारे में श्री गुरु नानक देव जी बताते हैं कि :—

''गुरमुख मनुष्य मुक्त है। गुरमुख वो है जो प्रभु में लीन रहता है। मनमुख मन के पीछे लग कर आवागमन के चक्कर में पड़ा रहता है।''[३६]

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार:— ''गुरमुख सच्चे प्रभु का डर हृदय में टिका कर बाणी द्वारा असाध्य मन को साध कर, प्रभु के गुण गायन करता हुआ पवित्र और ऊंची पदवी प्राप्त कर तन-मन से परमात्मा को याद करता हुआ उसमें लीन रहता है।''[३७]

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार उन्होंने वास्तव में गुरमुख की खोज में ही उदासियां की थीं। वे ज़िक्र करते हैं कि ''हमने केवल गुरमुखों के दर्शन के लिए ही उदासी भेस धारण किया है।''[३८]

गुरमुख के बारे में गुरु जी और भी ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि ''गुरमुख व्यक्ति वेदों का ज्ञाता है। वह गुरु-विचार के माध्यम से अनकहे प्रभु के गुणों को बयान कर सकता है। वह अपने परिवार में रहते हुए हरि के प्यार को दिल में बसा कर, गुरु के बताए शबद से आचरण ऊंचा कर, अहंकार को मार कर परमात्मा में विलीन रहता है।''[३९]

''यह धरती भी परमात्मा ने गुरमुखों के लिए

बनाई है।''[४०]

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार, ''गुरमुख मनुष्य को सभी रिद्धियां-सिद्धियां और बुद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। वह योगियों की तरह अच्छे-बुरे समय की दशा को भी जान लेता है। वो यह भी जानता है कि क्या त्यागना चाहिए और क्या ग्रहण करना चाहिए। गुरमुख व्यक्ति खुद भी मुक्त होता है और दूसरों को भी मुक्त करवा देता है।''[४१]

श्री गुरु नानक देव जी गुरमुख मनुष्य के कर्म के बारे में 'सिध गोसटि' बाणी में वर्णन करते हुए कहते हैं कि ''गुरमुख व्यक्ति नाम-सिमरन करता हुआ दान देता है और शारीरिक पवित्रता भी बनाए रखता है। उसकी चेतना सहज अवस्था में जुड़कर नाम जपती है। वह परमात्मा को प्राप्त कर दूसरों को भी नाम जपवा कर परमात्मा के साथ उनका मेल कराता है।''[४२]

गुरमुख व्यक्ति वेदों और स्मृतियों का ज्ञानी होने के साथ-साथ निरवैर (वैर रहित) भी है। वह नाम और शबद के माध्यम से अहंकार को जला कर, खरे-खोटे की पहचान करते हुए सच्चे प्रभु के गुण गाता है।''[४३]

मनमुख : जहां गुरमुख पांच विकारों से निर्लिप्त रहता हुआ आवागमन के चक्कर से ऊपर होता है, वहीं श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार, '' मनमुख मन के पीछे लग कर जीवन के सही रास्ते से भटक जाता है और यम की मार तले आ जाता है। वह अज्ञानता में अपने घर (निज स्वरूप) को छोड़ कर बाहर जंगलों में पदार्थों के लिए भटकता रहता है। वह मढ़ी-मसान में मंत्र पढ़ने वालों की तरह गलत रास्ते पर चलता हुआ कुवचन बोलता है और गुरु के शबद को नहीं समझता है।''[४४]

कहने से तात्पर्य, जो वास्तविक योग को नहीं अपनाता वह मनमुख है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार जिनको लोग योगी कहते हैं वे मनमुख की भांति मन के पीछे लग कर, घर-बार त्याग कर जंगलों में मुक्ति के लिए भटकते रहते हैं। गुरमुख या वास्तविक योगी गृहस्थी होता हुआ, पांच विकारों को मार कर, प्रभु का सिमरन करता हुआ सभी रिद्धियां-सिद्धियां प्राप्त करता है और जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होता है। वो खुद तो मुक्त होता ही है, दूसरों को भी मुक्ति दिलाता है।

शबद और नाम : श्री गुरु नानक देव जी ने वास्तविक योग की युक्ति के साधन भी 'सिध गोसटि' बाणी में (परमात्मा में विलीनता की युक्ति) बताए हैं। ये साधन हैं— शबद और नाम। इनके द्वारा ही जीवन का वास्तविक उद्देश्य (योगियों के अनुसार कैवल्य) प्राप्त होता है।

योगी 'शबद' में विश्वास रखने वाले हैं, परंतु उनका 'शबद' मन, प्राण, गुफा और सुन्न पर आधारित है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार उसका दर्शन है। सतिगुरु के साथ सिक्ख को एकजुट होने पर ही परम पद प्राप्त होता है। सतिगुरु सिक्ख को शबद के माध्यम से अपने में मिला लेता है और दुई या द्वैत का भेद मिटा देता है। इस तरह ''गुरु के शबद को पहचानने वाला ही असली योगी है। शबद की पहचान से उसका हृदय प्रकाशमान हो जाता है और उसे सम्मान मिलता है।''[४५] श्री गुरु नानक साहिब शबद की महत्ता बताते हुए फरमान करते हैं कि :—

''शबद के बिना प्राणों को रास नहीं आता और अहंकार की प्यास नहीं मिटती। गुरु का शबद ही प्राणों का सहारा है। जो मानव गुरु के शबद में रंगे

जाते हैं उनको सदा स्थिर नाम-रस मिल जाता है और वे सच्चे प्रभु में विलीन हुए रहते हैं।''[४६]

योगियों को संबोधित कर गुरु नानक साहिब 'सिध गोसटि' बाणी की पहली पउड़ी में ही 'शबद' की ज़रूरत के बारे में बताते हुए फरमान करते हैं:—

''तीर्थ-रटन या शारीरिक शुद्धता से मुक्ति नहीं मिलती। गुरु का सच्चा शबद ही मुक्ति का साधन है। शबद केवल उसके हृदय में ही बस सकता है, जिस पर प्रभु कृपा करे।''[४७]

'सिध गोसटि' बाणी में गुरु नानक साहिब 'नाम' की महिमा के बारे में भी चर्चा करते हैं। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार :—

''प्रभु के नाम में विलीन होने से अहंकार दूर हो जाता है और सच्चे प्रभु में विलीन हुआ जा सकता है। 'नाम' से ही योग की असली युक्ति का पता चलता है; तीन भवनों (धरती, आकाश, पाताल) का ज्ञान प्राप्त होता है; मोक्ष-द्वार मिलता है और सदा सुख प्राप्त होता है।''[४८]

नाम-सिमरन से मिलते फल के बारे में ज़िक्र करते हुए गुरु साहिब फरमान करते हैं कि नाम-रंग में रंगे जाने से ही परमात्मा के साथ मिलाप होता है। नाम ही तप है। यही सच्चा और विशुद्ध कर्म करना है। 'नाम' में लीनता से गुण तथा ज्ञान का विचार होता है और नाम के बिना बाकी सब बोलना व्यर्थ है।''[४९]

'सिध गोसटि' बाणी के आखिर में भी श्री गुरु नानक देव जी सारांश रूप में 'नाम' के बारे में योगियों को संबोधित करते हैं कि 'नाम' के बिना योग भी सफल नहीं होता।[५०] परंतु नाम कैसे मिले या कहां से प्राप्त हो, इसके बारे में श्री गुरु नानक साहिब 'सिध गोसटि' बाणी में ही ज़िक्र करते हैं कि ''यह 'नाम' पूर्ण गुरु से ही मिलता है और यही योग की युक्ति है।''[५१]

सारांश : 'सिध गोसटि' और इसके अलावा गुरबाणी की अन्य गवाहियों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि श्री गुरु नानक देव जी के समय योगी तंत्र-मंत्र से रिद्धियां-सिद्धियां प्राप्त कर लोक से दूर पहाड़ों की कंदराओं में छिपे हुए थे। योगी भेस धारण करने के बाद भी अहं का त्याग नहीं कर सके और अभी भी पांच विकारों की चादर में लिपटे हुए थे। योगियों को घर-बार त्यागने के बाद भी संतोष प्राप्त नहीं था और फिर वे गृहस्थियों के घर मांगने जाते थे। योगी वास्तविक योग की युक्ति से अभी वंचित थे, खाली थे।

'सिध गोसटि' बाणी में श्री गुरु नानक देव जी ने योगियों को संसार में रह कर, गृहस्थी होते हुए, गुरु द्वारा दिए 'नाम' और 'शबद' के सिमरन से योगी के चिह्नों (मुंदरा, खिंथा, झोली, सिंङी, टोपी, खप्पर, डंडा आदि) की जगह सत्, संतोष, संयम, लज्जा आदि अपनाने के लिए कहा। श्री गुरु नानक साहिब ने बताया कि तीर्थ-रटन, कान छिदवाना, शरीर पर राख मलना और हठ योग या अन्य न्युली कर्म करने से मुक्ति नहीं मिलती। मुक्ति तो केवल परमात्मा की कृपा से, सतिगुरु के बताए शबद द्वारा, उसके बताए रास्ते पर चल कर, योगी-चिह्नों की जगह सत्, संतोष, संयम, लज्जा आदि को हृदय में बसा कर ही मिल सकती है।

श्री गुरु नानक साहिब अनहद शबद सुनने या कैवल्य (मानव के पत्थर होने का रूप) को मुक्ति नहीं मानते। उनके अनुसार सच्चे प्रभु में विलीनता ही मुक्ति है। यही असली मनोरथ है। यही योगियों का कैवल्य रूप है।

इस तरह श्री गुरु नानक देव जी ने 'सिध गोसटि'

बाणी में योग की व्याख्या करते हुए सच्चे मार्ग, सच्चे भेस, सच्चे दर्शन, सच्चे योग और सच्चे शबद की व्याख्या कर योगियों या जीव रूप जिज्ञासु का सच्चा मार्गदर्शन किया है और सच्चे शबद की पहचान करवाई है। सत्य की पहचान, गुरु की ओट, परमात्मा की कृपा, नाम की कमाई और गुरमुख वाले कर्म ही सच्ची योग-युक्ति है, वास्तविक रिद्धि है और मुक्ति का रहस्य है।

टिप्पणियां और हवाले :

१. हजारी प्रसाद दृिवेदी, नाथ सम्प्रदाय, नवैद निकेतन, वाराणसी- ५ १९६६, पृष्ठ १.
२. उपरोक्त।
३. उपरोक्त, पृष्ठ ५.
४. डॉ. सरनाम सिंघ।
५. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला. १९८१, पृष्ठ १०१०.
६. भाई वीर सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ कोश, ख़ालसा ट्रैक्ट सोसायटी, श्री अमृतसर, १९८५, पृष्ठ ३४४.
७. जे. एस. (गरेवाल), गुरु नानक इन हिस्ट्री, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़, १९७२, पृष्ठ १११-११३.
८. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६६२.
९. उपरोक्त, पन्ना ९३८- ३९.
१०. उपरोक्त, पन्ना ९३९.
११. उपरोक्त, पन्ना १४०.
१२. उपरोक्त, पन्ना ४६९.
१३. वारां भाई गुरदास जी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९८१, पृष्ठ १३.
१४. उपरोक्त, पृष्ठ १५.
१५. उपरोक्त, पृष्ठ १६०.
१६. उपरोक्त, पृष्ठ २१.
१७. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९३९.
१८. उपरोक्त, पन्ना ७३०.
१९. उपरोक्त, पन्ना ९३७.
२०. उपरोक्त।
२१. उपरोक्त।
२२. उपरोक्त।
२३. उपरोक्त, पन्ना ६.
२४. उपरोक्त, पन्ना २२३.
२५. उपरोक्त।
२६. उपरोक्त, पन्ना ८७७.
२७. उपरोक्त।
२८. उपरोक्त, पन्ना ९०५.
२९. प्रो. साहिब सिंघ, गुरू ग्रंथ साहिब दरपण, पोथी सातवीं, राज पब्लिशर्ज़ (रजि.), अड्डा होशियारपुर, जलंधर, १९६९.
३०. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९८३.
३१. उपरोक्त, पन्ना ९४६.
३२. उपरोक्त।
३३. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९४२.
३४. उपरोक्त।
३५. उपरोक्त, पन्ना ९४४.
३६. उपरोक्त, पन्ना ९३९.
३७. उपरोक्त, पन्ना ९४१.
३८. उपरोक्त, पन्ना ९३९
३९. उपरोक्त, पन्ना ९४१.
४०. उपरोक्त।
४१. उपरोक्त, पन्ना ९४१.
४२. उपरोक्त, पन्ना ९४२.
४३. उपरोक्त।
४४. उपरोक्त, पन्ना ९४१.
४५. उपरोक्त, पन्ना ९४०.
४६. उपरोक्त, पन्ना ९४५.
४७. उपरोक्त, पन्ना ९३८.
४८. उपरोक्त, पन्ना ९४१.
४९. उपरोक्त।
५०. उपरोक्त, पन्ना ९४६.
५१. उपरोक्त, पन्ना ९४१- ९४६

स्वार्थ दिमाग़ पर क्या प्रभाव डालता है ?

-डॉ. हरशिंदर कौर एम. डी.*

किसी एकाध को छोड़ कर बाकी सब किसी न किसी अवसर पर स्वार्थी अवश्य हो जाते हैं। बहुत-से तो सारी उम्र ही स्वार्थ के अधीन गुज़ारते हैं। अपने और अपने परिवार के बारे में कुछ लोग फिक्रमंद होते हैं, परंतु कुछ लोग तो केवल अपने आप तक ही सीमित हो जाते हैं और परिवार या रिश्तेदारी भी पीछे छोड़ देते हैं।

यह कोई आज की बात नहीं है। जब से मानव अस्तित्व में आया है, स्वार्थ भी उसके मन में तब से उत्पन्न हो गया। स्वार्थ के ताने-बाने में से निकलना आसान नहीं होता, परन्तु फिर भी कुछ लोग अपने आप से बाहर आकर ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं।

ऐसी मदद में से भी स्वार्थ पूरी तरह से खत्म नहीं होता। इसमें से भी अपने मन की शांति और सुखद एहसास की खोज करते हुए मानव अपना स्वार्थ पूरा कर लेता है।

जैसे ही कोई जन आगे निकलने की कोशिश करे तो दो बातें होती हैं— दूसरे को लताड़ कर (दबाकर) आगे निकलना या अलग रास्ता चुन कर अकेले ही चलने की कोशिश करना।

हंगरी की यूनिवर्सिटी में वे लोग ढूंढे गए जो अहंकारी थे या निज़ को प्राथमिकता देते थे या स्वार्थी थे। इनमें से कुछ शक्की स्वभाव के थे, कुछ मौकाप्रस्त थे और कुछ शोषण करने वाले।

यह पक्का था कि सभी के सभी ज़रूरत पड़ने पर दूसरे को ख़त्म करने तक भी जा सकते थे। इनको 'धोखेबाज़' नाम देकर खोज आरंभी गई।

कंप्यूटर में इनके दिमाग़ की मैपिंग की गई यह बताए बिना कि उनको 'मैकिआवेलियन' नाम देकर खोज की जा रही है। सभी को एक कंप्यूटर गेम खेलने के लिए कहा गया। कंप्यूटर में पहले ही यह जानकारी भर दी गई थी कि कभी सही चाल चलनी है और कभी जानबूझ कर गलत। खेल खेलते हुए, दिमाग़ की मैपिंग करते हुए यह पता चला कि जब कंप्यूटर सही चाल चलता था तो इनके दिमाग़ के ख़ास हिस्सों में हरकत होती थी। तीसरी या चौथी चाल पर सारा कुछ समझते हुए इनके दिमाग़ के कई हिस्सों में हरकत होनी शुरू हो गई और वे सभी कंप्यूटर के साथ भी धोखा करने की कोशिश करते पाए गए। कहने से तात्पर्य, यह देखने में आया कि धोखेबाज़ लोग इतने ज़्यादा चालू होते हैं कि दूसरे द्वारा कही बात और उसकी बेचारगी या ज़रूरत को किस ढंग से अपने हित की तरफ घुमाना है, के बारे में उनका दिमाग़ पूरा ट्रेंड होता है।

अगर कहीं जानते-बूझते भी सामने खड़ा आदमी विनम्रता से पेश आता रहे तब भी स्वार्थी

*२८, प्रीत नगर, लोयर माल, पटियाला। फ़ोन : ०१७५-२२१६७८३

आदमी के दिमाग के अंदरूनी सेलफिश जर्कस या झटके उसे दूसरे से फ़ायदा उठाने के लिए उकसाते हैं। इस प्रकार स्वार्थी व्यक्ति न चाहते हुए भी दिमाग के अंदरूनी संदेशों के भंडार तले दूसरे का बुरा कर जाता है।

इंग्लैंड में हुई खोज के दौरान ऐसे स्वार्थी लोगों के दिमाग़ के 'डोरसोलेट्रल प्री फरंटल कोर्टेक्स' हिस्से में पक्का परिवर्तन हुआ मिला। वहां लगातार हल्का चुंबकीय दायरा पैदा कर जब इस हिस्से को कुछ देर के लिए सुन्न कर दिया गया तो साथ-साथ स्कैन जारी रखा गया।

उसके बाद उन सबको एक खेल खेलने के लिए दिया गया, जिसमें पैसे का आदान-प्रदान किया जाना था। इस खेल में एक व्यक्ति ने पैसे देने थे और दूसरे ने बांट कर लेने थे या लेने से इनकार करना था। अगर लेने से इनकार कर दिया जाता था तो कंप्यूटर का खेल बंद हो जाता था और किसी को भी पैसे नहीं मिलते थे अर्थात् किसी भी हाल में चाहे गलत विभाजन हो या सही, पैसे तो हर हाल में लेने ही पड़ते थे।

यह देखने में आया कि हर किसी ने गलत विभाजन में ही बेहतरी समझी। किसी एक ने भी कम पैसे लेने या गलत विभाजन का विरोध नहीं किया और चुपचाप जो मिला रख लिया। सबको पता था कि यह गलत है लेकिन बोला कोई नहीं।

दिमाग की दाहिनी तरफ़ वाला प्रीफ्रंटल हिस्सा प्रो. फैहर के अनुसार स्वार्थ पर काबू पाने में मदद करता है, जबकि बायां हिस्सा सही फ़ैसले पर भारी पड़ जाता है।

ज़ूरिक यूनिवर्सिटी और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में हुई साझी खोज के अनुसार चुंबकीय दायरे का प्रभाव अल्पकालीन था और टेस्ट किये जाने वालों को टेस्ट का मकसद भी नहीं बताया गया था, इसलिए खोज पर किंतु-परंतु हो सकता था। पुराने आविष्कारों में साबित हो चुका नुक्ता है कि दिमाग का यह हिस्सा काफ़ी समय बाद पूरा तैयार होता है, जब बाकी का दिमाग़ पूरी तरह से बन चुका हो।

कहने से तात्पर्य, जब तक जवानी की चौखट पर पैर न रखा गया हो, इस सेंटर के सैँल और उसके जोड़ पूरे बनते नहीं, इसी लिए बच्चे बड़ों की अपेक्षा बहुत कम नाजायज काम करते हैं, वक्त के पाबंद रहते हैं, विनम्रता भी रखते हैं और ईमानदार भी बड़ों से अधिक होते हैं।

हार्वर्ड के प्रो. अलवारो के अनुसार इस हिस्से के बढ़ने-फूलने पर प्रभाव पड़ता है:—

* गैंगस्टर द्वारा सृजित भय के माहौल का
* मीडिया के माध्यम से गलत आदमी को बार-बार उजागर करने का
* अमीर आदमी के आगे घुटने टेकते लोगों का
* राजनीतिज्ञों के आगे गिड़गिड़ाते लोगों का
* अमीरी के प्रदर्शन का
* अहंकार का
* मां-बाप के पालन-पोषण का
* ज्यादा धक्के का शिकार हो जाने का

आम लोगों में से स्वार्थी लोग इस प्रकार ढूंढे गये :—

* ऐसे लोग धोखा मिलने पर कभी भी दूसरे को छोड़ते नहीं।
* हमेशा बदला लेने की भावना मन में बसाए

रखते हैं।

* जरूरतमंद को देख कर उनकी आंखों की चमक और मुंह से टपकती लार छिपाए नहीं छिपती।

* आवाज़ में नरमी तभी दिखाई देती है जब शिकार करने की नीयत शिखर पर हो।

* जब शिकार करना असंभव हो तो जरूरतमंद पर ज़रूरत से ज्यादा भड़कना या दूसरों के आगे उसके बारे में भड़ास निकालनी।

* जहां थोड़ा-बहुत भी अपना फ़ायदा होता दिखाई दे, उस बात को प्राथमिकता देनी।

* लोगों के आगे अपनी ईमानदारी दिखाते रहना और अपनी प्रशंसा सुनते रहना।

* किसी की तरफ से किये किंतु-परंतु को बिलकुल ही सहन न करना और मौका मिलते ही पूरा बदला लेना तथा दूसरे को हद से अधिक ज़लील करना।

* अपने लाभ के लिए किसी को मारने तक से न हिचकिचाना।

* ऊंचा ओहदा (स्थान) हासिल करने के लिए अपने से छोटे के भी पैरों में पड़ जाना, मगर ओहदा हासिल करने के बाद पहचानने से इनकार कर देना।

* पीड़ित औरतों का जिस्मानी शोषण करना।

* झूठ बोलने में माहिर होना।

अंत में केवल इतना ही बताना रह गया कि खोज में शामिल किये गए लोग थे— राजनीतिज्ञ और बड़े बिजनेसमैन।

लंदन यूनिवर्सिटी के पहले साल के अनेक विद्यार्थियों, छोटे दुकानदारों, पेशेवर चोरों, डॉक्टर विद्यार्थियों, वकालत पढ़ रहे विद्यार्थियों, चालकों, टैक्सी चालकों आदि अनेक नमूनों में से शामिल किये लोगों में से किसी के भी दिमाग़ में उतनी तबदीली नहीं मिली जितनी राजनीतिज्ञों और बड़े व्यापारियों के दिमाग़ में मिली।

इन सबके मन में किसी बात पर स्वार्थ जागा तो वह ज़्यादा देर तक टिका न रह सका कि लंबी खोज की जा सकती। इसी लिए इन सबको खोज में से बाहर कर केवल राजनीतिज्ञ और बड़े व्यापारी शामिल किये गए जो हर समय कमाई करने के चक्कर में उलझे थे। वही खोज पूरी करने में सहायक हो सके।

यह सारी खोज विकसित मुल्कों में हुई है। हमारे मुल्क में अनेक पीर, पैग़ंबर, देवी-देवता और गुरु हुए हैं। उनकी शिक्षाएं भी अनेक हैं। श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं :

किसै न बदै आपि अहंकारी ॥
धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥
गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥
सो जनु नानक दरगह परवानु ॥ (पन्ना २७८)

मगर क्या किसी भी बाणी या शिक्षा या किसी संदेश को हम अपने हृदय में निवास की जगह देते हैं? अगर हां, तो फिर यहां स्वार्थी लोगों की भरमार क्यों है? अगर नहीं, तो क्या धर्म को हमने अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है और इससे ज्यादा उसे कोई मान्यता नहीं दे रहे? यह अत्यंत गंभीर और विचारने योग्य पहलू है।

गुरबाणी चिंतनधारा . . . १२७

सिध गोसटि : विचार व्याख्या

-डॉ. मनजीत कौर*

नामे राते हउमै जाइ ॥
नामि रते सचि रहे समाइ ॥
नामि रते जोग जुगति बीचारु ॥
नामि रते पावहि मोख दुआरु ॥
नामि रते त्रिभवण सोझी होइ ॥
नानक नामि रते सदा सुखु होइ ॥३२॥ (पन्ना ९४१)

३२वीं से ३४वीं पउड़ी तक प्रभु-नाम की महिमा का बखान करते हुए श्री गुरु नानक पातशाह ने समझाया है कि जैसे-जैसे मनुष्य प्रभु की याद में जुड़ता है अर्थात् प्रभु की बंदगी करता है वैसे-वैसे जीव की अहंकारी वृत्ति नष्ट होती जाती है, जिसके फलस्वरूप गुणों से मिलाप होता है। जैसे-जैसे जीव गुणों को आत्मसात करता है प्रभु-मिलाप का मार्ग प्रशस्त होता जाता है। सिमरन की दात गुरु-कृपा से ही सम्भव है। कोई अपने आप को सिध, योगी, सन्यासी, जो मर्जी कहलवाता रहे, गुरु-कृपा के बिना मोह-माया के जाल से मुक्ति सम्भव नहीं है।

३२वीं पउड़ी में गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि प्रभु-नाम में लीन होने से ही अहंकार नष्ट होता है। प्रभु-नाम में लीन व्यक्ति सत्य में समाया रहता है। जो व्यक्ति प्रभु-नाम में जुड़े हुए हैं वे प्रभु में समाये रहते हैं। प्रभु-नाम में लीन व्यक्ति को ही योग की वास्तविक युक्ति समझ आती है। तभी वह इस युक्ति पर सही विचार करने में समर्थ होता है। नाम में लीन व्यक्ति मोक्ष पा लेता है। नाम में लीन व्यक्ति को तीनों लोकों की सूझ प्राप्त हो जाती है। प्रभु-नाम में लीन व्यक्ति अपने तक ही सीमित नहीं रहता।

प्रभु-नाम में लीन व्यक्ति का अहंकार तिरोहित हो जाता है, जिसके फलस्वरूप उसे त्रिभुवन का ज्ञान हो जाता है। अहंकार के मिटते ही सम्पूर्ण सृष्टि के जीवों में परमेश्वर के दर्शन होने लगते हैं। कण-कण एवं जन-जन में ईश्वरीय सत्ता के दीदार होने लगते हैं। फलस्वरूप द्वैत भावना का समूल विनाश हो जाता है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि नाम में लीन व्यक्ति सदैव सुखी रहता है और उसका हर पल सुखद एवं आनंद से भरपूर होता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी आदि से अंत तक ईश्वर-नाम की महिमा का गान है। यह भी स्पष्ट है कि ईश्वर-नाम की प्राप्ति गुरु-कृपा से ही सम्भव है। गुरु-कृपा के बिना जप-तप, साधना, परिश्रम, योग सबके साथ हमारा अहंकार जुड़ा होता है और गुरबाणी आशयानुसार अहंकार समस्त प्राप्तियों को नष्ट कर देता है। गुरबाणी में इसे दीर्घ रोग माना गया है :

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
(पन्ना ४६६)

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

गुरबाणी में बेशक हउमै को दीर्घ रोग माना है, पर गुरु साहिब ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि यह रोग लाइलाज नहीं है। इसकी औषधि इस रोग के अंदर ही निहित है। जब हमें समझ आ जाये कि हम अहंकार जैसे रोग से ग्रस्त हो गए हैं तो इसका इलाज किसी डॉक्टर, हकीम या दुनियावी वैद्य के पास नहीं है, अपितु गुरु के पास है। गुरबाणी आशयानुसार :

मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै
काटै जम की फंधा ॥ (पन्ना ६१८)

अर्थात् सच्चा गुरु ही मेरा वैद्य है, जो हरि- नाम की औषधि मुख में डालता है, जिसके फलस्वरूप रोग तो क्या आवागमन के चक्र-बंधन भी कट जाते हैं।

काश हमें यह समझ आ जाए और गुरबाणी आशयानुसार हमारा जीवन बन जाए।

साधसंगि जिह हउमै मारी ॥
नानक ता कउ मिले मुरारी ॥ (पन्ना २५५)

हमें अच्छी तरह यह समझ लेना चाहिए कि अहंकार और परमेश्वर का नाम एक साथ हरगिज नहीं रह सकते :

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥
हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥
(पन्ना ५६०)

वास्तव में अहंकारी मन सेवा नहीं कर सकता और सेवा के बिना मन निर्मल नहीं होता। प्रभु-नाम में लीन व्यक्ति का अहंकार मिट सकता है इस रोग से मुक्ति गुरु-कृपा से ही सम्भव है। नाम-सिमरन की महिमा अपार है।

नामि रते सिध गोसटि होइ ॥
नामि रते सदा तपु होइ ॥
नामि रते सचु करणी सारु ॥
नामि रते गुण गिआन बीचारु ॥
बिनु नावै बोलै सभु वेकारु ॥
नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥३३ ॥
(पन्ना ९४१)

३३वीं पउड़ी में भी गुरु साहिब नें नाम की महिमा का गायन किया है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि नाम में लीन होकर गोष्ठि सफल होती है। नाम में लीन रहना ही वास्तविक तप है। नाम में लगे रहना अर्थात् निरंतर प्रभु-नाम जपना ही सर्वोत्तम कर्म है। नाम जपना सत्य-आचरण का सार है। नाम में लीन रहने के फलस्वरूप ही प्रभु-गुणों से नाता जुड़ता है। परमेश्वर के नाम के बिना मनुष्य का बोलना सब व्यर्थ है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि जो मनुष्य नाम में लीन रहते हैं उनकी जय-जयकार होती है।

इस पउड़ी की पहली पंक्ति में आये 'सिध गोसटि' शब्द का अर्थ प्रो. साहिब सिंघ ने पूर्ण परमेश्वर से मिलाप के संदर्भ में किया है अर्थात् परमेश्वर के नाम में लीन होकर ही प्रभु से मिलाप होता है। गुरबाणी में सच्चे नाम की महिमा का गान सर्वत्र दृष्टिगत होता है। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है :

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ (पन्ना ८)

अर्थात् जिनके हृदय में परमेश्वर का नाम बस जाता है ऐसे मनुष्य न कभी मरते हैं और न ही उनके साथ कोई धोखा या ठगी हो सकती है। गुरबाणी में

अमृत-नाम रूपी भोजन ग्रहण करने को प्रेरित किया गया है, जिसके फलस्वरूप सभी कष्ट दूर हो जाते हैं :

हरि अंम्रित नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥
जरा मरा तापु सभु नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥
(पन्ना ६११)

जिनके जीवन का आधार ही नाम है उनकी सर्वत्र जय-जयकार है :

—मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥
(पन्ना ७२७)

—पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥
जोग जुगति सचि रहै समाइ ॥
बारह महि जोगी भरमाए संनिआसी छिअ चारि ॥
गुर कै सबदि जो मरि जीवै सो पाए मोख दुआरु ॥
बिनु सबदै सभि दूजै लागे देखहु रिदै बीचारि ॥
नानक वडे से वडभागी जिनी सचु रखिआ उर धारि॥ ३४॥
(पन्ना ९४१)

३४वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने समस्त साधनाओं में से नाम को ही सर्वोपरि माना है। इस नाम की प्राप्ति केवल पूर्ण गुरु से ही सम्भव है। स्पष्ट किया है कि वे भाग्यशाली हैं जिन्होंने प्रभु को हृदय में बसाया है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि नाम पूर्ण गुरु से ही मिलता है। सच्चे प्रभु में लीन रहना योग की वास्तविक युक्ति है। योगी बारह सम्प्रदायों में बंट कर तथा सन्यासी दस सम्प्रदायों में विभक्त होकर भटक रहे हैं। जो शबद-गुरु में लीन होकर खुद को मिटा देते हैं अर्थात् अपना अहंकार नष्ट कर लेते हैं वे ही वास्तव में मुक्ति के द्वार को प्राप्त होते हैं। इस तथ्य को हृदय में विचार कर अच्छी तरह देख लें कि शबद से विहीन समस्त लोग द्वैत भाव से ग्रसित हैं।

गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि ऐसे लोग भाग्यशाली हैं, जिन्होंने सत्य को हृदय में धारण कर रखा है।

वास्तव में पूर्ण गुरु के बिना द्वैत भाव प्रबल रहता है, जिसके फलस्वरूप जीव हमेशा दुविधा एवं आशंका में रहता है। संशय वाला मन कभी निर्मल नहीं हो सकता। निर्मल मन के बिना कोई उपासना सफल नहीं हो सकती। गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए॥
मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ॥
कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ॥
(पन्ना ९१९)

अर्थात् भ्रम में पड़ा जीव मलीन है। इसे किस विधि से निर्मल किया जाए? गुरु-शबद से ही मन पवित्र होकर प्रभु-चरणों में चित्त की एकाग्रता बनती है। गुरु-कृपा से स्वाभाविक ज्ञान की प्राप्ति होती है और इस प्रकार संशय दूर होता है।

वास्तव में वही भाग्यशाली जीव हैं जिनका अहंकार और संशय गुरु-कृपा से दूर हो गया है। जिसके परिणामस्वरूप प्रभु उनके हृदय में सदा के लिए बस गया है।

गुरमुखि रतनु लहै लिव लाइ ॥
गुरमुखि परखै रतनु सुभाइ ॥

गुरमुखि साची कार कमाइ ॥
गुरमुखि साचे मनु पतीआइ ॥
गुरमुखि अलखु लखाए तिसु भावै ॥
नानक गुरमुखि चोट न खावै ॥३५॥ (पन्ना ९४२)

३५वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने इस तथ्य को उजागर किया है कि गुरु के सम्मुख रहकर जो मनुष्य अपनी सुरति को प्रभु-चरणों में जोड़ता है वह प्रभु में ही लीन हो जाता है और विकारों की चोटों से बच जाता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो मनुष्य गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलता है वह प्रभु-नाम रूपी रत्न प्राप्त कर लेता है। गुरमुख-जन अपनी लगन से नाम रूपी रत्न को पहचान भी लेता है अर्थात् उसकी कद्र और कीमत जान लेता है। गुरमुख सत्य का आचरण करता हुआ अपने मन को प्रभु में तल्लीन कर सदैव संतुष्ट रहता है। जब ईश्वर को अच्छा लगता है तब गुरमुख-जन उस अलख (जो ज्ञान-इन्द्रियों से दिखाई नहीं देता) सूझ को औरों को भी प्रदान कर देता है। गुरु पातशाह इस पउड़ी की अंतिम पंक्ति में यह स्पष्ट करते हैं कि जो मनुष्य गुरु-वचनों के अनुसार चलता है वह विकारों की मार नहीं खाता अर्थात् वह विकारों की चोट से बच जाता है।

जो व्यक्ति गुरु-वचनों की कमाई करता हुआ गुरु आदेशानुसार आचरण करता है वह प्रभु-चरणों में अपनी सुरत को जोड़कर प्रभु-नाम-रत्न-पदार्थ को खोज लेता है। यही सच्ची कमाई करता हुआ वह अपने मन को प्रभु-चरणों का आदी बना लेता है। बार-बार मन और बुद्धि से जो कार्य किया जाता है उसके संस्कार बनने लगते हैं और बार-बार उन कर्मों एवं विचारों का दोहराव स्वभाव में बदल जाता है। गुरमुख-जन प्रभु-नाम के आदी हो जाते हैं और उसी में उन्हें सच्चा सुख एवं संतुष्टि मिलती है। तब वे केवल आनंद की अनुभूति स्वयं ही नहीं प्राप्त करते अपितु औरों को भी इस आनंद का अधिकारी बना देते हैं। वास्तव में गुरु-वचनों की कमाई करने वाले विकारों से मुक्त हो जाते हैं।

गुरबाणी में गुरमुख के अनंत गुणों का वर्णन है। ऐसे गुरमुख-जन विरले हैं। पावन बाणी में फरमान है :

अंम्रितु वरसै सहजि सुभाए ॥
गुरमुखि विरला कोई जनु पाए ॥
अंम्रितु पी सदा त्रिपतासे करि किरपा त्रिसना बुझावणिआ ॥...
सभना उपरि नदरि प्रभ तेरी ॥
किसै थोड़ी किसै है घणेरी ॥
तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥

(पन्ना ११९)

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का यह पावन शबद इस संदर्भ में मार्गदर्शन करता है। प्रभु-नाम रूपी अमृत सहज रूप से बरसता है और कोई विरला व्यक्ति ही उसे पाता है। सब पर ईश्वर की कृपा-दृष्टि है, किसी पर थोड़ी तो किसी पर ज्यादा। गुरमुख व्यक्ति को ही यह समझ होती है कि हे प्रभु! तेरे से बाहर कुछ भी नहीं है अर्थात् यह विवेक बुद्धि गुरमुख-जन को ही नसीब होती है कि ईश्वर की रज़ा में ही सब कुछ है।

गुरमुखि नामु दानु इसनानु ॥
गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥

गुरमुखि पावै दरगह मानु ॥
गुरमुखि भउ भंजनु परधानु ॥
गुरमुखि करणी कार कराए ॥
नानक गुरमुखि मेलि मिलाए ॥ ३६ ॥ (पन्ना ९४२)

३६वीं पउड़ी में भी श्री गुरु नानक देव जी गुरमुख के गुणों को परिभाषित कर रहे हैं कि मनुष्य स्वयं को गुरु-चरणों में समर्पित कर, आपा-भाव त्याग कर अडोल रह सकता है। यही सच्चा नाम-दान, स्नान है। ऐसा मनुष्य ही अपना लोक-परलोक सफल बना लेता है। उसकी प्रेरणा से दूसरों का भी मार्गदर्शन होता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो जीव गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलते हैं उन्हीं का नाम जपना, दान-पुण्य करना एवं तीर्थ-स्नान आदि करना प्रवान है, सफल है। गुरमुख ही अडोल अवस्था को प्राप्त होता है अर्थात् सहज स्वाभाविक ध्यान में लीन बना रहता है। गुरमुख व्यक्ति को ही परमेश्वर की दरगाह में सम्मान मिलता है। प्रभु-दरबार में गुरमुख ही सच्ची शोभा पाता है। गुरमुख व्यक्ति समस्त भय, शंकाएं दूर करने वाले परमेश्वर में लीन हो जाता है, जो सबका मालिक है। गुरमुख व्यक्ति औरों से भी करने योग्य कार्य ही करवाता है। यूं कहें कि प्रभु गुरमुख व्यक्ति से करने योग्य कार्य करवाता है अर्थात् वह विवेकशील हो जाता है, करने योग्य कर्म करता है और न करने योग्य कार्यों को पूर्णतया त्याग देता है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरमुख दूसरों को भी गुरु आदेशानुसार कर्म करवाता हुआ प्रभु के संग मिला देता है।

गुरमुख व्यक्ति की प्रवृत्ति हंस जैसी हो जाती है। हंस नीर-क्षीर विवेकी है अर्थात् पानी और दूध को अलग कर देने की क्षमता हंस में है। वैसे ही ईश्वर ने गुरमुख-जन को यह विशेष गुण प्रदान कर रखा है कि वह करने योग्य कार्य करता है और नहीं करने योग्य कार्यों को पूर्णतया त्याग देता है। गुरमुख दूसरों में भी यह गुण भरने की क्षमता रखने वाला हो जाता है। प्रभु-चरणों में लीन रहने के फलस्वरूप उसके समस्त भय, शंकाएं दूर हो जाती हैं, क्योंकि भयभीत और शंकालू व्यक्ति विवेकशील हरगिज नहीं हो सकता। जिसे निर्भय स्वरूप, सर्वकला समर्थ, सर्वशक्तिमान प्रभु की शरण नसीब हो जाती है, गुरु-कृपा से उसमें प्रभु-गुण आने शुरू हो जाते हैं। 'जैसी संगत वैसी रंगत' आनी शुरू हो जाती है।

गुरबाणी आशयानुसार समस्त दान, स्नान उसी को प्रदान हैं जो प्रभु को भा जाए अन्यथा समस्त कर्म दिखावा मात्र ही हैं जो प्रभु-दर पर प्रवान नहीं होते। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने समझाया है :

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥
(पन्ना २)

अर्थात् गुरु पातशाह के चिन्तनानुसार मैं तीर्थों पर जाकर स्नान तो तब करूं अगर ऐसा करने से ईश्वर को प्रसन्न कर सकूं। अगर तीर्थ-स्नान से ईश्वर प्रसन्न ही न हो तो मेरे स्नान का क्या प्रयोजन?

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की पावन बाणी भी इसी तथ्य को उजागर करती है :

सतगुरु पुरखु न मंनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥
इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥
(पन्ना ३४)

ख़बरनामा

पाकिस्तान में सिक्खों को निशाना बनाने वालों के ख़िलाफ़ हो सख़्त कार्यवाही : भाई महिता

श्री अमृतसर : ४ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पर पथराव और सिक्खों के विरुद्ध नफ़रती हिंसा करने वाले लोगों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही की मांग की गई है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में प्रेस कान्फ्रेंस को संबोधित करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता ने कहा कि समूचा सिक्ख जगत पाकिस्तान के सिक्ख भाईचारे के साथ खड़ा है और इस सम्बन्ध में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल की तरफ से भारत के विदेश मंत्री श्री सुब्रामणियम जय शंकर को एक पत्र लिखा गया है। पाकिस्तान के सिक्खों की हिफ़ाज़त करना वहां की सरकार की जिम्मेदारी है। वहां के नागरिक होते हुए सिक्खों को संवैधानिक तौर पर हर तरह के हक प्राप्त हैं। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों की तरफ से जानबूझ कर अपने निजी हितों के लिए सिक्ख और मुसलमान भाइयों में दरार डालने की भद्दी हरकत की गई है। इन लोगों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही की जाये। भाई महिता ने कहा कि पाकिस्तान के सिक्ख नेता स. महिंदरपाल सिंघ पार्लीमानी सेक्रेटरी के अनुसार इस घटना की पाकिस्तान के मुस्लिम भाईचारे की तरफ से भी सख़्त निंदा की जा रही है। स. महिंदरपाल सिंघ के मुताबिक दोषियों के ख़िलाफ़ धारा २९५-सी के अंतर्गत केस दर्ज़ करने के लिए कार्यवाही की जायेगी। भाई महिता ने बताया कि जानकारी के अनुसार ४२ लोगों की पहचान की जा चुकी है। उन्होंने यह भी बताया कि गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के बाहर पथराव किया गया है और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को स्थानीय नेताओं से मिली जानकारी के अनुसार गुरुद्वारा साहिब की मर्यादा में किसी प्रकार का विघ्न नहीं पड़ा। हर रोज़ की तरह गुरुद्वारा साहिब में दीवान सजाए गए और संगत द्वारा हाज़री भरी गई। इस अवसर पर उनके साथ कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, सदस्य भाई राम सिंघ, मुख्य सचिव डा. रूप सिंघ, अतिरिक्त मैनेजर स. राजिंदर सिंघ रूबी, सहायक सुप्रिंटेंडेंट स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल आदि मौजूद थे।

मध्य प्रदेश में बेघर किये गए सिक्ख परिवारों के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से 50- 50 हज़ार रुपए की सहायता का ऐलान

श्री अमृतसर : ४ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से मध्य प्रदेश में बेघर किये गए सिक्ख परिवारों की मदद के लिए ५०- ५० हज़ार रुपए देने का ऐलान किया गया है। स्थानीय प्रशासन की तरफ से जिन सिक्ख परिवारों के घर गिरा दिए गए थे, उनको यह सहायता दी जायेगी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल द्वारा गठित की गई सब-कमेटी ने आज मध्य प्रदेश के पीड़ित सिक्खों के साथ मुलाकात की और उन्हें हर तरह की मदद देने का भरोसा दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल में कार्यकारी कमेटी के सदस्य स. इंदरमोहन सिंघ लखमीर वाला, सदस्य भाई

गुरचरन सिंघ (गरेवाल) और उप सचिव स. तेजिंदर सिंघ पड्डा शामिल हैं। शिष्टमंडल ने मध्य प्रदेश के शिवपुरी और कराहल के गुरुद्वारा साहिबान में सिक्खों के साथ बातचीत की। इस दौरान शिष्टमंडल के सदस्यों ने भाई लौंगोवाल के साथ फ़ोन पर बातचीत कर जिनके घर गिराए गए थे, उनके लिए ५०- ५० हज़ार रुपए की सहायता करने का ऐलान किया। कराहल के गुरुद्वारा साहिब में बड़ी संख्या में संगत ने शामिल होकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल के सदस्यों को सारी जानकारी दी और उनकी ख़बर लेने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई लौंगोवाल का धन्यवाद किया।

मध्य प्रदेश में सिक्खों के घर तोड़ने से सम्बन्धित मामले में सरकार की तरफ से जांच के आदेश

श्री अमृतसर : ५ जनवरी : सिक्खों के आक्रोश के आगे झुकते हुए मध्य प्रदेश में सिक्ख परविारों को उजाड़ने के मामले की मध्य प्रदेश सरकार की तरफ से जांच के आदेश दे दिए गए हैं। यह जानकारी देते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई गुरचरन सिंघ (गरेवाल) ने बताया कि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा श्री नरिंदर सलूजा के नेतृत्व में जांच समिति का गठन किया गया है। इसके अलावा सिक्खों के विरुद्ध बयानबाज़ी करने वाले मुकेश नामक व्यक्ति को भी गिरफ़्तार कर लिया गया है। इसने सिक्खों के विरुद्ध घटिया बयानबाज़ी कर वीडियो सोशल मीडिया पर डाला था। वर्णन योग्य है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का एक शिष्टमंडल कार्यकारी सदस्य स. इंदरमोहन सिंघ लखमीर वाला के नेतृत्व में मध्य प्रदेश भेजा गया है जिसमें सदस्य भाई गुरचरन सिंघ (गरेवाल) और उप सचिव स. तेजिंदर सिंघ पड्डा भी शामिल हैं।

मध्य प्रदेश से भाई गुरचरन सिंघ ने जानकारी दी कि गत दिवस बड़ी संख्या में करहल के गुरुद्वारा साहिब में सिक्खों का जलसा जुड़ा, जिसने सरकार की ज्यादतियों के विरुद्ध सख़्त रोष प्रकट किया। उन्होंने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने स्थानीय सिक्खों द्वारा मध्य प्रदेश में ज़िला शियोपुर के कलेक्टर के नाम तहसीलदार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक तथा अन्य अधिकारियों को मांग-पत्र देकर सिक्खों के साथ किये गए धक्के का इन्साफ करने के लिए कहा। इसके साथ ही सिक्खों को गलत शब्द बोलने और सोशल मीडिया पर वीडियो फैलाने वाले मुकेश मल्होत्रा को तुरंत गिरफ़्तार करने की भी मांग की। उन्होंने कहा कि ४० वर्ष से आबाद सिक्खों के घर तोड़ते समय किसी तरह की अपील-दलील नहीं सुनी गई। अब सरकार ने सिक्खों के आक्रोश को देखते हुए जांच समिति बना दी है, जो पीड़ित सिक्खों तक पहुंच करेगी। भाई गुरचरन सिंघ ने जानकारी दी कि सरकार ने सिक्खों के विरुद्ध किसी भी तरह की कार्यवाही रोकने के हुक्म भी जारी किये हैं और घर तोड़ने की कार्यवाही की रिपोर्ट भी मांगी है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पीड़ित सिक्खों के साथ है और भविष्य में उन तक फिर संपर्क बनाने के लिए वचनबद्ध है।